संजय की कलम से ..

कुम्भकर्ण का वास्तविक परिचय

रामायण को पढ़ने से कुम्भकर्ण का जो परिचय मिलता है, वह बड़ा विचित्र-सा है। उसमें लिखा है कि कुम्भकर्ण रावण का एक भाई था जो छह महीने सोया करता था और जगाये जाने पर एक दिन के लिए उठता था और फिर सो जाता था।

वास्तव में 'कुम्भकर्ण' कोई संज्ञा-वाचक नाम नहीं है बल्कि लाक्षणिक नाम है। जिस मनुष्य के कर्ण (कान) कुम्भ (घड़े) के समान हों, वह व्यक्ति 'कुम्भकर्ण' है। 'कुम्भ' की विशेषता यह है कि उसके मुख के पास यदि आप बोलें तो उसमें आवाज़ जायेगी तो सही और थोड़ी गूँजेगी भी परंतु कुम्भ वहीं का वहीं पड़ा रहेगा, उसमें आपका कहना फलीभूत नहीं होगा। मान लीजिए, आप कहते हैं – ''जागो, जागो, आत्माओ, भगवान अवतरित हो चुके हैं, उनसे आत्मिक नाता जोड़कर सुख-शान्ति के भागी बनो..'' तो यह कथन कुम्भ में जाकर थोड़ा प्रतिध्वनित तो होगा परंतु उसमें धारणा नहीं होगी; घड़ा तो वहीं पड़ा रहेगा, उसके लिए जागने का प्रश्न ही नहीं उठता। ठीक इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति ऐसे स्वभाव का है कि कोई अच्छी और लाभदायक बात अथवा ज्ञान का कोई अनमोल रहस्य सुनने पर भी नहीं सुनता, उसे क्रियान्वित नहीं करता तो मानो कि वह 'कुम्भकर्ण' ही है।

चेष्टाहीन, बुद्धिहीन, आलसी, निद्राप्रिय ही कुम्भकर्ण है

अगर किसी मनुष्य की बुद्धि में कोई बात नहीं बैठती तो प्राय: कहा जाता है कि 'यह मनुष्य पत्थर-बुद्धि है।' अगर कोई मनुष्य बात को सुनने और समझने पर भी उसे क्रियान्वित नहीं करता, अपने आचार और व्यवहार में नहीं लाता तो कहा जाता है कि 'यह तो जड़ है।' अगर कोई मनुष्य बात को सुनकर और समझकर जीवन में गंभीरतापूर्वक व्यवहार करता है तो उसके बारे में कहा जाता है कि 'यह तो सागर की तरह गंभीर है।' अत: जैसे बुद्धि की शिथिलता की पत्थर से उपमा दी जाती है, क्रियाहीनता की तुलना जड़ से की जाती है और गंभीरता की तुलना सागर से की जाती है, वैसे ही मनुष्य बहरा तो न हो परंतु बात को सुनकर भी अनसुनी कर दे तो उसके कानों की उपमा 'कुम्भ' से की जाती है। पत्थर के तो कान होते ही नहीं, उसमें तो आवाज़ प्राय: जाती ही नहीं, इसलिए कानों की उपमा पत्थर

अमृत-सूची

- परिस्थिति में भी प्रगति *(सम्पादकीय)* 6
- बैज ने बचाया लुटेरों से 8
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के..9
- 'पत्र' संपादक के नाम.....11
- जीभ पर बन्धन 12
- ईर्ष्या का वहम मिटेगा 15
- सचित्र सेवा समाचार.....16
- पुरुषोत्तम संगमयुग में 18
- भग जाता है दुख *(कविता)* ... 19
- सचित्र सेवा समाचार..... 20
- सच्ची श्रद्धा का फल 22
- ग्लोबल हॉस्पिटल में..... 22
- मरुभूमि में उद्यान.....23
- सचित्र सेवा समाचार..... 24
- नरक से स्वर्ग की ओर.....26
- परिवर्तन 27
- विकारजीत ही महावीर है 29
- मैंने एशिया में ईश्वर का 32
- विशेष सूचना.....34

नये सदस्यता शुल्क

	वार्षिक	आजीवन
भारत		
ज्ञानामृत	80 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	80/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	750 /-	8,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	750/-	8,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें - 09414006904, 09414154383

से नहीं की जा सकती अर्थात् किसी व्यक्ति को 'पत्थरकर्ण' नहीं कहा जा सकता। कुम्भ की यह विशेषता है कि उसके ऊपर का मुख और उसकी गर्दन की शक्ल (आकृति) बहुत-कुछ मनुष्य के कान से मिलती है। बस, शक्ल ही मिलती है, अक्ल नहीं मिलती। जिसके कान के पर्दे के साथ लगकर अनमोल रहस्य वापस लौट आता है जैसे कि घड़े के पेन्दे के साथ आवाज़ टकरा कर वापस लौट आती है, वह चेष्टाहीन, बुद्धिहीन, आलसी, निद्राप्रिय, जड़ जैसा मनुष्य कुम्भकर्ण ही है।

बेटा देह-अभिमान का

फिर कठिनाई से जगाये जाने पर भी जो मनुष्य राम से प्रिय मिलन नहीं मनाता बल्कि उसका विरोध करने को उतारू हो जाता है और राम के मिलन की खुमारी में न रंग कर, मदिरा की मस्ती में चूर रहता है, तमोगुणी नशों में ही लगा रहता है, वह नर भी कुम्भकर्ण ही है। वह जागा भी तो क्या जागा? वह सचमुच 'असुर' अथवा 'राक्षस' ही ठहरा। राम का पक्ष लेने की बजाय जो रावण अर्थात् असुराई की ओर से लड़ा, वह ईश्वर-विमुख मनुष्य सचमुच 'कुम्भकर्ण' तो है ही, परंतु आसुरी बुद्धि वाला होने के कारण 'असुर' भी कहलाता है। उसे रावण का भाई माना जाता है क्योंकि 'रावण' शब्द का अर्थ है 'रुलाने वाला' और रावण के दस मुख पुरुष में और स्त्री में पाँच-पाँच विकार (काम-क्रोधादि) की व्याप्ति के प्रतीक हैं। पाँच विकारों का पिता है देह-अभिमान। सुस्ती, निद्रा अथवा आलस्य का पिता भी देह-अभिमान ही है। अत: एक ही देह-अभिमान रूपी पिता की संतान होने के कारण कुम्भकर्ण को रावण का 'भाई' कहा गया है।

सुस्ती के शिकार कई महावीर

इसी आलस्य, निद्रा अथवा तमोगुण ने कई ऋषियों को, अप्सराओं को तथा कई वानरों को भी खा लिया था। भाव यह है कि भगवान की खोज करने वाले कई ऋषि भी इससे प्रभावित होकर इस आलस्य के गर्भ में चले गये थे; जो मातायें-बहनें ज्ञान और योग रूपी परों द्वारा सूक्ष्म देवताओं के लोक की ओर भी ध्यान में उड़कर चली जाती थीं, उनमें से भी कोई-कोई इस सुस्ती अथवा अति निद्रा रूपी 'कुम्भकर्ण' का शिकार हुई थीं और राम की सेवा में लगे कई नर (वानर) भी इस आलस्य रूपी कुम्भकर्ण द्वारा हताहत हुए थे। इसलिए आलस्य और निद्रा रूपी यह कुम्भकर्ण बहुत ही बलशाली असुर माना गया है।

इन्द्रपद की बजाय निद्रापद

भला जो मनुष्य ब्रह्मा जी से भी इन्द्रपद अर्थात् 'देवताओं के भी राजा' का पद लेने की बजाय 'निद्रापद' लेवे, आप उसे 'कुम्भकर्ण' नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे? ब्रह्मा जी तो सर्व ज्ञानियों में श्रेष्ठ माने गये हैं, उनका मत उत्तम माना गया है, वे जगत के पिता हैं। अत: अपने प्रजापिता से तो मनुष्य ज्ञान रूपी वरदान प्राप्त करके सब-कुछ प्राप्त कर सकता है, परन्तु उनसे भी कोई निद्रा की प्राप्ति की चेष्टा करे तो वह सचमुच ही असुर ठहरा!

सुग्रीव कौन?

फिर, यह जो कहा गया है कि कुम्भकर्ण ने 'सुग्रीव' को बन्दी बना दिया, इसका भला क्या भाव है? 'ग्रीव' का अर्थ है 'कण्ठ' अथवा 'गला'। जिसका गला सुन्दर हो अर्थात् जिसकी वाणी मधुर, प्रिय, सुकोमल और हितकर हो, वही 'सुग्रीव' है। जो राम के पक्ष की बात कहने वाला हो, ईश्वरवादी हो, जो अपने कण्ठ से प्रभु की महिमा गाये, वास्तव में उसी का गला तो सुन्दर है। ऐसा नर ही वास्तव में राम के सेवकों (वानरों) का सेनापति है क्योंकि वह ईश्वर का परिचय देता है, ईश्वर का

सहयोगी होकर बर्तता और अपने वाक् बल तथा प्रभु-प्रीति से असुराई का कुशलता से सामना करता है। ऐसा मनुष्य भी कभी कुम्भकर्ण द्वारा बंदी बन जाता है अर्थात् सुस्ती या निद्रा ऐसी चीज़ है कि इसके सुहावने जाल में ऐसे लोग भी फंस जाते है। सुस्ती मनुष्य की मधुर, कल्याणकारी वाणी को भी बंद कर देती है।

तो भाव यह हुआ कि हमें रावण के साथ-साथ उसके सहोदर अथवा भाई कुम्भकर्ण को भी जलाना चाहिए।

आज भी कुम्भकर्ण ज़िन्दा है – कैसे?

हम देखते हैं कि आज भी कुम्भकर्ण ज़िन्दा है। हरेक मनुष्य पर आलस्य, निद्रा और ईश्वर-विमुखता का कुछ-न-कुछ प्रभाव है। मानो, कुम्भकर्ण का उनके मन में प्रवेश है।

आज ब्रह्माकुमारियाँ और ब्रह्माकुमार, मनुष्यों को जब यह संदेश देते हैं कि 'जागो, जागो, अब परमपिता परमात्मा अवतरित होकर सुख-शान्ति का वरदान दे रहे हैं', तो भी वे जागते नहीं हैं, उनके कानों में यह आवाज़ पड़ने पर भी उन पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ता, वे प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा भगवान से 'इन्द्रपद' का वरदान लेने की चेष्टा नहीं करते बल्कि सोये रहते हैं मानो उन्होंने निद्रापद का अभिशाप पाया है। वे मधुर, कल्याणकारी तथा ईश्वर-प्रेम के वचन भी नहीं बोलते अर्थात् उन्होंने सुग्रीव को भी बन्दी बना रखा है। वे राम के मिलन का आनन्द नहीं मनाते बल्कि धन की मदिरा के अथवा मान-शान की मदिरा के 200 घड़े पीने में मस्त रहते हैं। और तो क्या, वे राम का अथवा भगवान का विरोध करते हैं अर्थात् विपरीत बुद्धि की न्यायीं बर्तते हैं और जो लोग भगवान के ज्ञान-ध्यान में तत्पर हुए राजऋषि हैं अथवा भगवान के कार्य में लगे हुए वानर-सेना हैं, उन्हें भी मारने को अथवा कष्ट देने को दौड़ते हैं। फिर, ऐसे भी तो लोग हैं जो ज्ञान का घोष सुनने पर जागते हैं परंतु एक दिन जागकर फिर छह महीने सो जाते हैं अर्थात् छह महीने तक ज्ञान लेने का अथवा ज्ञान-जागृति का नाम भी नहीं लेते। तो क्या यह कहना सत्य नहीं है कि कुम्भकर्ण आज भी ज़िन्दा है?

मन को टटोल कर देखें

ब्रह्माकुमारियाँ और ब्रह्माकुमार परमपिता परमात्मा शिव के अवतरण का स्पष्ट संदेश देने के अतिरिक्त, आने वाली प्राकृतिक आपदाओं की, गृह-युद्धों की तथा विश्व-युद्ध की भी सूचना देते हैं, परंतु इन सबको सुनकर भी लोग अनसुनी कर देते हैं। वे कहते हैं – 'बहन जी, इसमें हमारी रुचि नहीं है अथवा अभी हमारे पास समय नहीं है अर्थात् हमें अज्ञान-निद्रा में सोये रहने दीजिये।' इतना ही नहीं बल्कि वे तो काम रूपी विष के दो-दो सौ घड़े भी पीना चाहते हैं। क्या ऐसे नर साक्षात् एवं साकार कुम्भकर्ण नहीं हैं? वह समय दूर नहीं है जब ऐसे नर भी विनाश के धमाके सुनकर जगेंगे अवश्य परंतु उस समय देर हो चुकी होगी और उनके मुख से ये शब्द निकलेंगे – 'ज्ञान सूर्य परमात्मा प्रगट भी हुए परंतु हम उतनी देर तक निद्रा में सोये रहे, हमने उनसे इन्द्रपद का वरदान न पाया। हाय, हमें जगाया गया परंतु समय पर न जागे।' अब हर-एक पाठक को चाहिए कि अपने मन को टटोल कर देखे कि कहीं उसके मन-भवन के किसी कोने में कुम्भकर्ण कहीं सुस्ती, निद्रा, अज्ञानता, अहंकार रूप मद, ईश्वर विमुखता आदि-आदि के रूप में छिपा तो नहीं बैठा है? यदि छिपा बैठा हो तो आज ही रावण के इस भाई का योगाग्नि द्वारा अन्तिम संस्कार करके, इसका दाह-संस्कार करके इसे राख कर डालें!!! ❖

सम्पादकीय ..✍

परिस्थिति में भी प्रगति

परिस्थिति बाहर से आती है परन्तु प्रगति अंदर से होती है। दोनों के मार्ग ही भिन्न हैं, इसलिए टक्कर होने की संभावना ही नहीं है। टक्कर तब होती है जब हम परिस्थिति से उलझने में, भीतर की प्रगति में लगने वाली सूझ और शक्ति को झोंक देते हैं। यदि परिस्थिति का उपेक्षित दृष्टि से अवलोकन करते हुए हम आंतरिक प्रगति पर सारा ध्यान केन्द्रित कर लें तो परिस्थिति लौट जाती है, कागज़ का शेर सिद्ध होती है और हमें तोहफा देकर जाती है।

महारथी कौन?

शरीर रूपी रथ को चलाने वाली आत्मा रथी कहलाती है। संसार में जितनी भी आत्मायें हैं चाहे किसी भी कोने में, कैसे भी गुणों वाली, अपने-अपने शरीर की रथी हैं परंतु महा रथी कौन है? महारथी अर्थात् महान रथी, असाधारण कर्त्तव्य करने वाली रथी। जैसे प्रबंधन के क्षेत्र में प्रबंधक और महाप्रबंधक में जो अंतर होता है, उसी प्रकार, रथी और महारथी में अंतर है। महारथी माना ऐसा चतुर चालक, जो ऊबड़-खाबड़ और अनजान रास्तों से गुज़र कर भी मंज़िल को ढूँढ़ ले, जो विपरीत परिस्थितियों में भी जीवन-यात्रा को सुरक्षित रीति से पूरा कर ले। जिसमें ऐसे महान गुण हैं कि वह औरों के अटके रथ को भी खींच कर बाहर निकाल दे, दूसरों की समस्या हल कर दे, उनके रास्ते के गड्ढे भर दे, उनके रथ को भी अनर्थ से बचा दे। दूसरे शब्दों में, जो परिस्थिति में भी करे प्रगति, वही है महारथी।

शारीरिक व्याधि से अधिक सूक्ष्म है मानसिक व्याधि

यदि कोई व्यक्ति मरे हुए शेर का सिर काट लाए तो कोई उसे शारीरिक रूप से बलशाली नहीं मानेगा। मरे शेर का सिर तो डरपोक और कमजोर भी काट सकता है परंतु जीवित शेर को जो मार दे, संसार उसे बलवान, बलशाली, वीर, निर्भय आदि विशेषण देता है। इसी प्रकार आध्यात्मिक क्षेत्र में भी यदि कोई व्यक्ति ऐसे व्यक्ति के साथ निभा रहा है जिसके क्रोध, लोभ के संस्कार मर चुके हैं, जो लचीला है, जो सरलचित्त और स्नेही-सहयोगी है, दयालु और क्षमाशील है, तो यह ऐसे ही है जैसे मरे हुए शेर का सामना करना परंतु कमाल तो उसकी है जो ऐसे लोगों का भी साथ ले ले जिनमें काम, क्रोध या अन्य विकारों का उग्र वेग है, जो केवल देह आधारित हैं, जो भोगने की दृष्टि से संसार के हर वस्तु, व्यक्ति को देखते हैं, जो स्वार्थी और संग्रहवृत्ति के हैं, मैं-मेरा की दलदल में नाक तक फँसे पड़े हैं, जिनके हर श्वास-उच्छवास से विकारों की गंध फैलती है। ऐसे लोगों का साथ लेकर, उन्हें अपना संग देकर उनके कपट-कारनामों को हर लेना और कमल-समान जीवन की ओर आकर्षित कर लेना, ऐसे ही है जैसे आशाहीन प्रकरण में आशा जगा देना। चिकित्सा के क्षेत्र में उस चिकित्सक को होशियार माना जाता है जो मौत के मुँह से व्यक्ति को निकाल ले, मरणासन्न को नया जीवन दे दे। विकारों के चंगुल में फँसे, निरंतर मानसिक अशान्ति और तड़प का अनुभव करने वाले को इस चंगुल से मुक्त करने वाले का कार्य भी इतना ही बल्कि इससे भी ज्यादा महान है क्योंकि शरीर की व्याधि से मन की व्याधि अधिक सूक्ष्म होती है।

टकराया और पूजनीय बन गया

बहते हुए पानी के मार्ग में अनेक रुकावटें आती हैं पर वह उन

रुकावटों से टक्कर नहीं लेता। दाएँ-बाएँ या ऊपर-नीचे जहाँ भी, थोड़ा-भी स्थान मिले, वहाँ से बह जाता है। पानी में परोपकार की इतनी ऊँची भावना है कि वह बहाव में रुकावट बनने वाले पत्थर के भी कोने घिसाकर उसे पूजनीय बना देता है। दुनिया में लोग कहते हैं – जो हमसे टकराएगा, वह चूर-चूर हो जाएगा। परंतु पानी का कहना है, जो हमसे टकराएगा, वह पूजनीय बन जायेगा। पत्थर पानी के उपकार से चिकना और गोल हो जाता है फिर शिवलिंग के रूप में पूजनीय बन जाता है। पानी ने, बाधा को देख अपने उपकार के संस्कार को नहीं त्यागा बल्कि बाधक के संस्कार का त्याग करवाकर उसे पूजनीय बना दिया। सच्चा योगी वही है जो पानी की तरह परोपकार करता है। बाधा बनकर आने वालों को अपने संग के प्रभाव से अपने जैसा महान बना लेता है।

एक बार एक डाकू ने, अपाहिज का नकली रूप बनाकर, संत की दया का फायदा उठाकर, उसका घोड़ा छीन लिया। संत ने उसे पहचान लिया पर धैर्य नहीं खोया, बस इतना ही कहा, इस घटना का जिक्र किसी के आगे मत करना वरना लोग दुखी व अपाहिजों पर विश्वास करना छोड़ देंगे। इसके बाद घर आकर संत तो निश्चिंत होकर सो गया लेकिन डाकू सारी रात करवटें बदलता रहा और अगले दिन चुपचार घोड़े को संत के अस्तबल में बाँध गया।

विचार कीजिए, दोनों में सुखी कौन और दुखी कौन? एक, घोड़े को खोकर भी सुख की नींद सो रहा है और दूसरा, घोड़े को पाकर भी करवटें बदल रहा है। परोपकारी सोता है और ठग करवटें बदलता है। यदि सेवा करके भी आपको करवटें बदलनी पड़ें तो आप आत्मावलोकन कीजिए कि वह सेवा थी भी या नहीं?

गुण भी सुरक्षित और चीज़ भी सुरक्षित

संत का हृदय क्षमा से भरा हुआ है और जहाँ क्षमा है, वहाँ परमात्मा का साथ है ही तभी उसे प्रिय चीज़ के खो जाने का डर नहीं है। अपाहिजों और दुखियों की सेवा निरंतर होती रहे, इतनी ऊँची मानसिकता ईश्वर की मदद का प्रतिफल है। धोखे का शिकार होने पर भी अच्छाई के मार्ग पर अडिग रहना, यह ईश्वरीय बल है। सामने धोखा देने वाला जा रहा है फिर भी उसके लिए मन में गाली, बद्दुआ या अपशब्द न आना, इतनी क्षमाशीलता, यह भी ईश्वरीय मदद है। इस क्षमाशीलता का फल भी बहुत सुन्दर निकलता है। सुबह उन्हें अस्तबल में अपना घोड़ा मिल जाता है। कितने भाग्यशाली रहे वे, उनके गुण भी सुरक्षित रहे और चीज़ भी। यदि वे विपरीत व्यवहार कर लेते तो गुण भी जाते और घोड़ा भी। इसलिए कहा जाता है – क्षमा करो, रहमदिल बनो, तभी सच्ची प्रगति कर सकेंगे।

अधूरी ही रहेगी दूसरे के बदलने की कामना

कभी यह नहीं सोचो कि पहले यह ठीक हो जाए तो मैं भी अपने-आप ठीक हो जाऊँगा। क्या कोई समुद्र के किनारे जाकर कहता है कि हे लहर, आप बड़ी नहीं, छोटी आओ, टेढ़ी नहीं आओ, सीधी आओ? यह संसार भी सागर है, छोटी-बड़ी, सीधी-टेढ़ी सब प्रकार की लहरें आयेंगी लेकिन याद रखिए, स्वस्थिति सदा परिस्थिति से बड़ी है। कभी शर्त के आधार पर जीवन नहीं बनाइये कि क्रोध करने वाला शीतल हो जाए तो मैं भी हो जाऊँ। यह ऐसा क्यों करता, ऐसा नहीं करना चाहिए, इसको तो बदलना ही पड़ेगा, नहीं। जो स्वयं को बदलेगा, उसका समय बचेगा लेकिन जो दूसरे के बदलने की कामना करेगा, भले 20 वर्ष भी व्यर्थ चले जाएँ पर यह कामना अधूरी ही रह जायेगी। परिस्थितियाँ हमारे घरों

में घूमने वाले मच्छर-मक्खियों से ज्यादा कुछ नहीं होती। मच्छर-मक्खियाँ आदि भोजन आदि पर बैठ भी जाएँ तो हम तुरंत उड़ा देते हैं और एक-दो बार भिनभिनाकर वे भाग भी जाते हैं, न भागें तो हमारे पास दवाइयाँ, इलैक्ट्रिकल बैट आदि कई साधन भी तो हैं जिनसे हम उन्हें भगा सकते हैं।

आज के संसार में चारों ओर पापाचार है पर यह माहौल हमें संपूर्णता की ओर अग्रसर करने के लिए अनिवार्य है। सूर्य, गहन अंधकार के बाद ही प्रकट होता है। अंकुर के बाहर आने के लिए धरती में दरार आना अनिवार्य है। प्यारे ब्रह्मा बाबा ने संसार के प्रबल विरोध के बीच में यज्ञ की नाव को खेया और सफलता पाई। जिन राहों से हमारे अग्रज (ब्रह्मा बाबा और उनके साथी) गुज़रे, राहें तो हमारे लिए भी वही हैं, हाँ, उनके नेतृत्व से कुछ सरल हो गई हैं। इन राहों पर चलते कुछ बातें सामने आती भी हैं तो उन्हें प्रगति की अनिवार्य सीढ़ी समझ चढ़ते जाना है क्योंकि परिस्थितियाँ ही प्रगति का आह्वान करती हैं। परिस्थितियों से घबराना नहीं है। उनसे कोई न कोई तोहफा प्राप्त करना है।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

बैज ने बचाया लुटेरों से

ब्रह्माकुमार कोमल, चंडीगढ़

कार्यालय में ज्यादा काम होने के कारण, उस दिन मुझे रात के 11 बज गये थे। कार्य को समेटकर मैं साइकिल पर घर की ओर चल पड़ा। मैं बिल्कुल सुनसान क्षेत्र से गुज़र रहा था, थोड़ी धुंध भी छाई हुई थी। ठीक 11 बजकर 15 मिनट पर अचानक मोटे-मोटे डंडे हाथ में लिए तीन लुटेरों ने मुझ पर घेराव डाल दिया। साइकिल और बैग छीनकर मुझे और भी अंधेरे की तरफ ले जाने लगे और कहने लगे, तुम्हारे पास जो कुछ भी है, सब कुछ दे दो। उस समय मेरे पास लगभग 1600 रुपये, मोबाइल, एटीएम कार्ड तथा वोटर आई.डी. थे। ऐसी परिस्थिति में भी मन शान्त था। पहले मैंने सोचा, जो भी माँग रहे हैं, आराम से इनको देकर घर चलता हूँ। तभी मन में संकल्प आया, क्यों न इनको बैज दिखाया जाये। उस समय बैज अंदर वाली जैकेट में लगा था। जैसे ही मैंने बैज दिखाया और कहा कि मैं आश्रम से हूँ, तो एकदम ही उनका मन बदल गया और कहने लगे, इसको जाने दो।

जिस तरह से उन्होंने घेराव डाला था, धमका रहे थे और अंधेरे में ले जा रहे थे तो लग रहा था, ये छोड़ने वाले नहीं हैं। पर अचानक ही चमत्कार हुआ और उन्होंने 150 रुपये निकालकर, साइकिल, मोबाइल, एटीएम कार्ड, वोटर आई.डी. सब कुछ लौटा दिया। बड़े प्यार से मुझे जाने के लिए कहा। मैं बाबा का धन्यवाद करता हुआ घर आ गया। इस घटना में बैज के चमत्कार के पीछे राज़ यह था कि मैं कहीं भी आने-जाने से पहले बाबा को बताता हूँ कि बाबा, मैं वहाँ जा रहा हूँ। इससे मैं समझता हूँ कि अब मेरी ज़िम्मेवारी बाबा पर है और अवचेतन मन में भी निश्चिंतता रहती है कि बाबा को बता दिया है। इस प्रकार, निर्भय भी रहता हूँ। यह बाबा की ही टचिंग थी जो उन्होंने ऐसी मुसीबत में रक्षा की।

(बाबा कहते हैं, बच्चे, खुदा दोस्त को सदा साथ रखो। वर्तमान समय नये-नये अपराधों की बाढ़ आई हुई है। ऐसे में अपने को सुरक्षित रखने का एकमात्र तरीका यही है कि हम सर्वशक्तिवान खुदा दोस्त की सदा अंगुली थामे रहें। बाबा ने गारंटी ली हुई है, जो बच्चा मेरी सही याद में होगा, उसका बाल भी बांका नहीं हो सकता – सम्पादक)

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्यबुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... – सम्पादक

प्रश्नः- दूसरों के पार्ट, उन्नति और उनके संबंधों को देखकर ईर्ष्या होती है, उसे कैसे खत्म करें?

उत्तरः- दूसरों से भेंट करके हम कभी भी अपना भाग्य नहीं बना सकते। हमारे गुणों और कर्मों से हमारा भाग्य बनता है लेकिन ईर्ष्या हमें ऐसे कर्म करने नहीं देती, गुणवान बनने नहीं देती। अच्छे कर्मों और गुणों से कोई भाग्य बना रहा है तो उसे देखकर खुश होने नहीं देती। कोई भाग्य बना रहा है, उसमें गुण हैं, विशेषतायें हैं, बाबा के यज्ञ की सेवा कर रहा है तो मुझे खुशी है। उसको आगे बढ़ता देख अगर मुझे खुशी नहीं होती है तो इसका कारण ईर्ष्या है। मैं अपना भाग्य नहीं बना सकती तो कम से कम दूसरों को भाग्य बनाते देख खुश तो रहूँ। मैं सोचती हूँ, यह काम तो कर रहा है पर इसके अवगुणों को कोई देखता नहीं, ऐसी क्रिटिकल नेचर ईर्ष्या ले आती है। फिर उसको गिराने की इच्छा होती है। ईर्ष्या वाला कहेगा, मेरे को सब सहयोग दें, माँगने में आगे, देने में कंजूस।

सिंगापुर में एक मैगज़ीन वाले ने इंटरव्यू लेते समय प्रश्न पूछा, क्या तुमको किसी से ईर्ष्या नहीं होती? मैंने कहा, भगवान ने इस जेल से हमें फ्री कर दिया है। मैं भगवान का बहुत शुक्रिया मानती हूँ। अभी तो हमें ज्ञान है पर भक्ति मार्ग में भी हमने यही सोचा कि हरेक अपना कर्म करता है और अपना भाग्य खाता है। भगवान सबका भला करे। तो सबके प्रति अच्छी भावना रखने से अपना भी भला और दूसरों का भी भला हो जाता है। फिर पूछा, क्या तुम्हारे लिए कोई ईर्ष्या रखता है? इस प्रश्न के लिए यह उत्तर आया कि हमारे लिए कोई क्यों ईर्ष्या रखेगा? अगर रखता है तो उसे हमसे जो चाहिए, ले ले। बाबा दाता बैठा है। अगर किसी को मेरे वाली कुर्सी चाहिए तो आकर बैठ जाए, मैं पट में बैठ जाऊँगी। सेन्टर चाहिए, ले ले। भाषण के लिए स्टेज चाहिए तो ले ले, कोई बड़ी बात नहीं है, मैं साइलेन्स में बैठ जाऊँगी, बाबा के दिल में बैठ जाऊँगी। जिसको दस-बीस सेन्टर चाहिएँ, स्टूडेन्ट चाहिएँ, ले ले। इसमें ईर्ष्या किस बात की? मैं खुद ही बाबा की स्टूडेन्ट हूँ। जब तक संपूर्ण नहीं बने, स्टडी हमारी पूर्ण नहीं हुई है। ऊँची-ऊँची बातों को छोड़कर, चीप बातों की जेल में अपने को बाँधें, क्यों? अगर ऐसा होगा तो हम आध्यात्मिक रूप से ऊँचा नहीं उठ सकते। इसको चांस मिलता, मुझे नहीं, यह सोचना भी चीप क्वालिटी है। ईर्ष्या वाला सतयुग में आयेगा नहीं। थोडी परसेन्ट वाला भी नहीं आयेगा। अभी भले खुश हो जाये अल्पकाल के लिए पर सतयुगी राजाई का अधिकारी नहीं बन पायेगा। किसी से ईर्ष्या करके हम राजाई नहीं ले सकते। सतयुगी राजाई है ही सत्य से राज्य करने के लिए। बाबा कहता है, बच्चे पहले स्व पर राज्य करो। हमारे अंदर घटिया क्वालिटी का संस्कार एक परसेन्ट भी न रहे। अगर कोई मेरे से ईर्ष्या करता, उसे देख दुखी होना, यह भी घटिया क्वालिटी है। अपने

पुरुषार्थ की क्वालिटी फर्स्टक्लास बनानी है। चेक करना है, मेरे पुरुषार्थ की क्वालिटी कैसी है? फर्स्ट, सेकेण्ड या थर्ड? किसी से भेंट करके पुरुषार्थ करेंगे तो सेकेण्ड, थर्ड में चले जायेंगे। फालो ब्रह्मा बाबा को और शिव बाबा को। और बातें बुद्धि में रखनी नहीं हैं। जो सच्चाई-सफाई से पुरुषार्थ करता है, वह इन सब बातों से मुक्त हो जाता है। ईर्ष्या का बंधन सबसे कड़ा है, जो संबंध में रूहानियत व स्नेह से वंचित कर देता है। ईर्ष्या, ना स्नेह देने देती, ना लेने देती। मुझे बाबा से जो मिला है, वह देना है। सतयुग तो बाद की बात है, अभी जीवनमुक्त रहें, जीवन में किसी बात का बंधन ना बाँधें, कोई इच्छा, ममता न हो।

प्रश्नः- यदि संगमयुग पर कोई काम विकार को नहीं जीतता पर अन्य गुण अपनाता है और सेवा भी बहुत करता है तो क्या वह सतयुग में जायेगा?

उत्तरः- असंभव। जो निर्विकारी नहीं बनता, वह सर्वगुणसंपन्न कैसे बनेगा? निर्विकारी माना किसी भी विकार का अंश ना रहे, उसमें भी काम तो महान शत्रु है। अगर महान शत्रु पर जीत नहीं पाई तो क्रोध, लोभ, मोह भी नहीं छोड़ सकता। काम को नहीं जीत सकता लेकिन सोचता है, मैंने क्रोध, मोह को जीत लिया, वास्तव में जीता नहीं, वे बैठे हैं। बाबा कहता है, काम बादशाह है और क्रोध वज़ीर है। बच्चू बादशाह, पीरू वज़ीर। जब राज्य उनका चल रहा है, मुख्य विकार रूपी शत्रु का तो वह सतयुग में आने कैसे देगा। सतयुग वाले भी उसे आने नहीं देंगे। कहेंगे, वहीं बैठ। पहले शत्रु को, पहले मार तभी देही अभिमानी स्थिति बनेगी। अगर इसको नहीं जीत सकता तो इसका अर्थ है देह-अभिमान है। देह-अभिमान को छोड़ो, देही अभिमानी स्थिति में रहकर सर्वगुणों को धारण करो। मान लो, वह गुस्सा नहीं करता, मीठा बोलता है पर अंदर शत्रु बैठा है तो ये गुण किस काम के? ये गुण स्वयं को खुश करने के लिए हैं पर बाबा को खुश करने के लिए नहीं। बाबा को खुश करने के लिए योगी बनो, पवित्र बनो। पहले पवित्र बनो तो योगी बनेंगे।

प्रश्नः- देह का भान पूरा-पूरा त्याग हो जाये, उसके लिए क्या पुरुषार्थ करना चाहिए?

उत्तरः- बाबा ने थोड़े शब्दों में इशारा दे दिया है। बाबा के समर्पित बच्चों ने बहुत त्याग किया है। जब अज्ञानता है तब होता है अहंकार, जब ज्ञान में आते हैं तो अभिमान, जो बहुत काल का है, वो दुख-सुख, मान-अपमान में समान रहने नहीं देता। अभिमानवश फीलिंग आ जाती है दुख की या अल्पकाल के सुख के आकर्षण की। जब देहभान से परे रहने के बहुतकाल के अभ्यासी होंगे तो समझ में आयेगा कि यह अभिमान है, अभिमान किस प्रकार का होता है, यह अनुभव होता है अच्छी तरह से। फिर अटेन्शन रखते हैं। जब देह के भान से परे हुए तो देह से ताल्लुक रखने वाली सब बातें जैसेकि कर्मेन्द्रियों की आकर्षण अपने आप खत्म हो गई। मन में इच्छा जो पैदा होती है वो भी खत्म हो गई। जब समर्पित होते हैं तो कहते हैं, तन-मन-धन से समर्पित। जब तन से कहा माना मन भी बाबा का हो गया। मन से कहा, मन ने माना कि मुझे तन से समर्पित होना है। ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा को तन दिया, फिर इसे अमानत समझा। जो सच्चा है वो अमानत में ख्यानत नहीं करेगा। दिया या छोड़ा तो वापस नहीं लेंगे। पवित्रता, सत्यता, दिव्यता अपनाई तो अशुद्धि को ना यूज कर सकते हैं, ना वो हमारे पास आ सकती है। हर मुरली में सच्चे पुरुषार्थी को कोई न कोई ऐसी बात अवश्य मिलती है, रोज़ मिलती है इसलिए अच्छी तरह मुरली सुनें, मुरली पर रोज़ ध्यान दें, पढ़ें। दिन-भर ध्यान दें तो जो बाबा चाहता, हो सकता है। यह कभी मत सोचो कि कैसे करूँ, हर मुरली में बाबा कहता है, ऐसे करो। कैसे शब्द, सच्चे पुरुषार्थी को कहना नहीं है। जिसको नहीं करना है वो कहता है, कैसे करूँ? जिसको करना है वो समझता है कि जो बाबा कहता है, वो हो सकता है। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

'ज्ञानामृत' मई 2010 अंक अपने पड़ोसी ब्र.कु. भाई से हस्तगत हुआ। वास्तव में यह बाजारू पत्र-पत्रिकाओं से हटकर आत्मविकास की अद्‌भुत जीवनधारा है। इसमें पिरोए संस्कारयुक्त लेख, कविता, संस्मरण, अनुभव व गीत सब के सब सुरुचिपूर्ण, ज्ञानवर्द्धक व प्रेरणादायक हैं, जो अमृत पेय की भांति हैं जिसे पीकर प्राणी दैहिक, दैविक एवं भौतिक संतापों से मुक्त हो जाते हैं और आनन्द की अनुभूति प्राप्त करने लगते हैं। 'शान्ति और विकास' लेख में लेखिका ने बिल्कुल सही टिप्पणियाँ की हैं कि हम शान्ति का चिन्तन करेंगे तो शान्ति का अनुभव करेंगे। अगर अशान्ति का चिन्तन करेंगे तो अशान्ति का अनुभव करेंगे। लेकिन यह कैसी विडंबना है कि शान्ति हमारे भीतर है और हम उसे बाहर ढूँढ़ रहे हैं। 'दो शब्द अभिभावकों से' लेख में लेखिका का जुमला 'नींव बनाए बिना सुन्दर महल किस काम का' हृदय की गहराइयों में जाकर स्पर्श कर गया। इसके अलावा 'डिप्रेशन: जानकारी और समाधान', 'नशा: एक सामाजिक अभिशाप' व 'मुसकराने की आदत डालिए' बेहद जानकारीपरक लगे। इतनी कम कीमत में इतनी अच्छी पत्रिका प्रकाशित करने हेतु आप स्तुत्य हैं। 'ज्ञानामृत' अपनी सुगंध चारों दिशाओं में बिखेरती रहे, यही शुभकामना है।

– नानदुन दास निवाई,
मुजफ्फरपुर

मई 2010 में ज्ञानामृत के संपादकीय में प्रकाशित 'कर्मगति' पढ़कर मेरे मन की धारणायें बदल गईं, मुझे नई दिशा मिली। 'डिप्रेशन: जानकारी और समाधाान' लेख ने भी हमारी आँखें खोल दीं। आजकल हर मानव कहीं न कहीं डिप्रेशन का शिकार हो रहा है। 'नशा: एक सामाजिक अभिशाप' लेख महत्त्वपूर्ण जानकारी से भरपूर है। शराब सेवन के रोकथाम के लिए दिये गये विचारणीय बिन्दु बहुत मूल्यवान हैं। 'संशय के बादल छंट गये' लेख में साइकिल पर मदद करने वाला बाबा मन को छू गया।

– ब्र.कु.प्रेरणा,
ब्रह्मपुर (उड़ीसा)

ज्ञानामृत का जून 2010 अंक पढ़ा। संपादकीय में 'मैं कौन?' एवं 'मानव और पेड़' लेख बहुत ही अच्छे लगे। वैसे पूरे लेख ज्ञानवर्धक हैं जिन्हें पढ़कर प्रेम, शान्ति, शक्ति एवं आनंद प्राप्त होता है।

– रामदास धुसिया, जबलपुर

जून 2010 के अंक में 'शराब है खराब' सुंदर और प्रभावशाली लेख पढ़कर लगा कि इसे पढ़ने से मनुष्य को शराब छोड़ने की प्रेरणा मिलती है। लेख में, बीरबल ने अपनी बुद्धिमानी से कुत्ते, घोड़े, हाथी और मुर्दे के सुंदर मिसाल से अकबर बादशाह की शराब पीनी छुड़वाई। बीरबल की युक्ति से अकबर का कल्याण हुआ और वे माता देवी के पक्के भक्त बन गये। ज़िन्दगी में स्वर्ग का द्वार खोलना है तो मनुष्य को कभी शराब नहीं पीनी चाहिए।

– ब्र.कु. लालाजी भाई गोवेकर,
मेहकर

ज्ञानामृत पत्रिका में बड़े भावपूर्ण लेख प्रकाशित होते हैं। जून 2010 के अंक में रमेश भाई के लेख में लिखा है – 'जब आदरणीया हृदयमोहिनी दादी रशिया में थे, तब एक आत्मा ने उनसे पूछा, आप समस्याओं का सामना कैसे करते हैं। आदरणीया दादी ने कहा, हम समस्या को समस्या नहीं बल्कि परीक्षा समझते हैं और होशियार विद्यार्थी परीक्षा से डरता नहीं है, वो जानता है कि परीक्षा ऊपर के दर्जे में जाने का साधन है अत: हमारे लिए परीक्षा आगे बढ़ने की अर्थात् सफलता की चाबी है।' यह पढ़कर महसूस हुआ कि समस्या का निवारण करना माना अपनी खूबी बढ़ाना।

– दत्तात्रेय मामीडवार,
सिडको, नांदेड

जीभ पर बन्धन

• ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

आज वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा-प्रदूषण, वायुमण्डल या आकाश प्रदूषण व ऊर्जा (अग्नि) के संसाधनों का प्रदूषण दूर करने के लिये कितने ही 'प्रबंधनों' को ईजाद किया जा रहा है। यदि शरीर के पाँच तत्वों के प्रदूषण का प्रबन्धन आध्यात्मिक अर्थों में किया जाये तो प्रकृति के पाँचों तत्वों के प्रबन्धन की शायद आवश्यकता ही न रह जाये। खून (जल) वेन संबंध (Blood Relation) से जुड़ी 'अपनेपन' की रग, आत्मा में मोह प्रदूषण है। माटी के इस शरीर का शृंगार और दूसरे की देह-माटी के प्रति आकर्षण आत्मा में 'काम' विकार का प्रदूषण है। श्वासों-श्वास (वायु) धन संचय करने में लगे रहना, आत्मा में 'लोभ' का प्रदूषण है। ज़रा-ज़रा सी बातों पर आपा खोकर अग्नि-रूप हो जाना आत्मा में 'क्रोध' का प्रदूषण है। हमेशा व्यर्थ चिन्तन करना व दिमाग आकाश में रखना, आत्मा में 'अहंकार' का प्रदूषण है। इन सबका 'स्व-प्रबन्धन' किया जाना आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग के सतत् अभ्यास से ही संभव है।

प्रबंधन, निदान नहीं, किनारा करता है

आजकल, किसी पर आप कुछ आवश्यक नियमों का बन्धन लगायें तो वह स्वीकार करना नहीं चाहेगा। अत: बन्धन का विकल्प 'प्रबन्धन' तलाशा गया है। ज़रूरत है कि विकारों या बुरे संस्कारों पर बन्धन लगाया जाये और पुरानी कुरीतियों व रूढ़िवादी परंपराओं को तोड़ा जाये। परंतु विकारों पर बंधन लगाने के बजाय इनका प्रबंधन किया जा रहा है अर्थात् विकारों के साथ जीवन जीने के मार्ग तलाशे जा रहे हैं। 'प्रबन्धन', रोग या अवरोध का स्थायी निदान नहीं करता परंतु उससे किनारा कराता है, यह किसी भी 'प्रबन्धन' की सबसे बड़ी कमी है।

बन्धन से परिवर्तन

आज सर्वत्र 'प्रबन्धन' की धूम है, सारा संसार प्रबन्धन की बैसाखी पर चल रहा है परंतु हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं। कारण है संस्कार रूपी जड़ को न सींच कर शाखाओं व पत्तों को सींचना। आज संस्कारों का भी प्रबन्धन किया जा रहा है जबकि होना चाहिए 'संस्कार-परिवर्तन'। संस्कार परिवर्तन से ही संसार परिवर्तन हो सकता है। यदि किसी बात का परिवर्तन किया जाना संभव न हो तो बजाय प्रबन्धन के उस पर बन्धन लगाया जाना चाहिये। दीर्घकालिक बन्धन फिर परिवर्तन में बदल जाता है। किसी बढ़ते पौधे की बाहर फैली शाखायें हों या किसी बच्चे के बाहर फैले दांत, जब उन्हें अंदर की तरफ खींच कर बाँधा जाता है तो कुछ माह पश्चात् उनकी दिशा व दशा में परिवर्तन आ जाता है। विषय वासनाओं पर 'इच्छा शक्ति' का दीर्घकालिक बन्धन इनमें पहले परिवर्तन लाता है, फिर इन्हें मिटाता है। शिव-स्मृति के सतत् अभ्यास से इच्छा शक्ति बलवती होती है।

प्रबंधन अर्थात् काम निकालना

सतयुग में न तो 'प्रदूषण' था, ना 'प्रबन्धन' क्योंकि मनुष्य-आत्मा प्रकृति की निर्मलता-स्वच्छता से खिलवाड़ नहीं करती थी। वहाँ हर कर्म शानदार तरीके से स्वत: हो जाया करते थे क्योंकि वहाँ प्रालब्ध का बल था, कर्म अकर्म थे और प्रकृति भी सतोप्रधान होने के कारण मनुष्यों की सहयोगी थी। 'प्रबन्धन' की आवश्यकता इसलिए हुई क्योंकि द्वापरयुग से नैतिक व सामाजिक मूल्यों की अनदेखी होने लगी। 'बन्धन' अर्थात् काम में ना लाना और 'प्रबन्धन' अर्थात् काम निकालना। बन्धन में दृढ़-नियंत्रण है और प्रबंधन में विकल्पता है। बन्धन शत-प्रतिशत इलाज है और प्रबन्धन काम निकालने हेतु एक 'ईजाद' या उपाय है।

'प्रबन्धन' या 'पर-बन्धन' के दायरे में जीभ को भी लिया जाना चाहिये, ऐसा विचार किसी अति-कुशल व कुशाग्रमति प्रशासक को भी नहीं आता। ऐसा इसलिये क्योंकि 'जीभ-पर-बन्धन' एक आध्यात्मिक विषय है और आज के प्रशासक या प्रबन्धक, आध्यात्मिक ज्ञान के महत्त्व को समझते नहीं। हाँ, कई निगमों व कंपनियों को अब आध्यात्मिकता का महत्त्व समझ में आने लगा है और वे 'ब्रह्माकुमारियों' से संपर्क करके भिन्न-भिन्न आध्यात्मिक पाठ्यक्रमों का आयोजन अपने कर्मचारियों के लिए कर रही हैं। इससे उन्हें जो लाभ प्राप्त हो रहा है, वह अद्‌भुत है। तो आइये 'जीभ-पर-बन्धन' पर व्यापक चर्चा करें।

वाक्यपटुता से बढ़ रही है कटुता

इसे 'जीभ प्रबन्धन' ना कहकर 'जीभ-पर-बन्धन' कहना इसलिए भी सही है क्योंकि जीभ पर बन्धन लगाना ही 'जीभ प्रबन्धन' है। जीभ के 'शब्द प्रेम' या 'वाक्यपटुता' से ही आज आपसी कटुता बढ़ रही है। होना चाहिए वाक्‌पटु अर्थात् आवश्यक बात कहना और उससे ज्यादा कुछ भी ना कहना। संक्षिप्तता वाक्‌पटुता का आकर्षण है। एक वाक्‌पटु के कर्म में उसके 'वाक्' का पुट होगा अर्थात् जैसी कथनी वैसी करनी होगी। विश्वकल्याण की वृत्ति से भरपूर साधक जितना ही जीभ पर बन्धन लगाता जाता है, उतना ही उसकी मनसा सेवा में बल भरता जाता है जो कि आने वाले समय में सेवा का प्रमुख आधार है।

ईसा ने कहा था – 'स्वर्ग और पृथ्वी के मिटने के बाद भी मेरे शब्द नहीं मिटेंगे।' यह माना जाता है कि हजारों वर्ष पहले भारतीय मनीषियों के द्वारा कहे गये शब्द आज भी वायुमण्डल या अंतरिक्ष में मौजूद हैं और एक दिन विज्ञान उन शब्दों को पकड़ पाने में सफल होगा। वास्तव में समय वृत्ताकार (Cyclic) है और उसका सतयुग, त्रेता, द्वापर व कलियुग में जब-जब पुन: आगमन होता है, तब-तब पहले वाले वही शब्द पुन: स्वरित-गुंजित होते हैं।

हृदय में है हर की दया

दिमाग में यदि विचार पैदा होते हैं तो हृदय में भावनायें पैदा होती हैं। दिमाग उस खेत की मिट्टी के समान है जिसमें बीज नष्ट होकर ऐसे पौधे को जन्म देता है जो बढ़ता रहता है। परंतु हृदय में गया शब्द मोती बन जाता है जो फिर अपनी स्थिति व रूप कभी नहीं बदलता। इसलिए बोले गये सुखदायी शब्दों के लिए कह दिया जाता है कि 'इन्हें मैंने हृदय से स्वीकार किया', 'उसका तो हृदय परिवर्तन हो गया', 'उसकी बात ने मेरा हृदय छू लिया' इत्यादि। परमपिता शिव भी अपने बच्चों से हृदय का प्रेम या हृदय की याद चाहते हैं, दिमागी प्रेम नहीं। दिमाग में ही 'आग' है और हृदय या 'हर-दय' में 'हर' (शिव) की दया है।

महावाक्य जिन्दा रहते हैं

कहा जाता है कि तीन चीज़ें जाने के बाद वापस नहीं आती – 1.कमान से छूटा तीर, 2.बीता हुआ समय और 3.मुँह से निकली बात। शब्द तीर की तरह होते हैं जो एक बार छोड़ दिये गये तो फिर कभी बदले नहीं जा सकते। कई बार अपने कहे गये बुरे शब्दों के लिए दूसरे से माफी माँग कर विवाद समाप्त कर दिया जाता है और वे शब्द विस्मृत कर दिये जाते हैं। इसके विपरीत, महापुरुषों के गुज़र जाने के बाद भी उनके द्वारा जगकल्याण हेतु बोले गये महावाक्य जिन्दा रहते हैं और यही किसी महापुरुष को अमर बनाता है। 'जय जवान, जय किसान', 'न बुरा बोलो, न बुरा देखो, न बुरा सुनो' (गांधीजी के तीन बन्दर), 'जो बोले सो निहाल, सत् श्री अकाल' आदि ऐसे वाक्य हैं जो अभी भी इनके वक्ताओं को प्रत्यक्ष करते हैं।

मीठा बोल सबसे सस्ता

जीभ से उच्चारा गया कटु शब्द, छुरे से किये गये वार से ज्यादा गहरा

जख्म देता है। यह शब्द ही तो है जो एक-दूसरे के बीच औषधि भी बन सकता है तो बंदूक की गोली भी। कहा भी गया है –

'शब्द सम्भारे बोलिये,
शब्द के हाथ न पाँव।
एक शब्द औषधि करे,
एक शब्द करे घाव।'

संसार में यदि सबसे सस्ती कोई चीज़ है तो वह है मीठा बोल। और यदि संसार में सबसे महंगी कोई चीज़ है तो वह है कटु बोल। ये कटु बोल ऐसा घाव कर देते हैं जो जीवन-भर पीड़ा होती रहती है। इसका सारे जीवन में भी इलाज हो नहीं पाता। हाँ, आध्यात्मिक औषधि से शर्तिया इलाज संभव है, परंतु इसके लिए आध्यात्मिक सेवाकेन्द्र पर जाकर दृष्टिकोण रूपी घाव की कटुता रूपी मवाद निकलवानी पड़ती है।

बंदूक चलने से पहले जीभ चलती है

चीन के दिवंगत नेता 'माओ' का कथन था कि 'शक्ति बंदूक की नाल से निकलती है (Power comes from the barrel of a gun)' परंतु यह कहना भी गलत नहीं होगा कि 'शक्ति जीभ रूपी नाल से निकल कर नष्ट होती है (Power is wasted from the barrel of a tongue)।' देखा जाये तो बंदूक चलने से पहले जीभ चलती है। यदि जीभ का संयम हो तो बंदूक चलने-चलाने की नौबत ही न आये। दूसरे शब्दों में जीभ से चली गाली की प्रतिक्रिया अर्थात् प्रतिध्वनि कई बार बंदूक की गोली की ध्वनि से आती है। इसके विपरीत मधुर-मीठी बोली से कई बार चल रही बंदूक की गोली व मुख से निकल रही गाली, दोनों थम जाती हैं। संसार में आज यदि अरबों-खरबों रुपये के हथियार व गोला-बारूद किसी भी समय उपयोग के लिए तैयार रखे हैं तो उसका एक कारण 'जीभ पर बंधन' ना होना भी है। और जीभ पर बंधन इसलिए भी नहीं है क्योंकि दृष्टि व दृष्टिकोण निर्बन्धन व अनियंत्रित हैं।

शराब पिलाकर उगलवा लिए जाते हैं रहस्य

जीभ चेतना के दो स्तर से वाचा में आती है, चेतन मन द्वारा व अवचेतन मन के द्वारा। चेतन मन समय, वातावरण, स्थान, अन्य व्यक्ति से व अपने खुद के स्वभाव से प्रभावित होता रहता है और एक बनावटी-दिखावटी भाषा बोलता रहता है। मुख के मौन के दौरान भी चेतन मन मुखर होता रहता है परंतु अवचेतन मन यथार्थ बोल बोलता है अर्थात् आत्मा के वास्तविक गुण-अवगुण को परिलक्षित करता है। मिसाल के तौर पर यदि किसी ने शराब पी रखी हो तो उसका चेतन मन सुध-बुध खो बैठता है परंतु अवचेतन मन को कोई फर्क नहीं पड़ता। ऐसा व्यक्ति नशे में हर बात सच बोलता है क्योंकि उस समय झूठ बुलवाने के लिए चेतन मन को बुद्धि का सहयोग नहीं मिलता। झूठ बोलने में भी कुबुद्धि मदद करती है। अवचेतन मन तो पूर्व की स्मृति के आधार पर हर बात 'जैसी की तैसी' उठाता है और जीभ उसे उसी रूप में सामने वाले को परोस देती है। यही कारण है कि बड़े-बड़े रहस्य या गोपनीय बातें भी किसी को शराब की दावत देकर उगलवा ली जाती हैं। कई बार नींद में मनुष्य का अवचेतन मन व जीभ चलायमान हो उठते हैं और मनुष्य लड़खड़ाती भाषा में बहुत कुछ कह बैठता है जो कि सत्य होता है। उसके जागने पर परिवार वाले मज़ाक उड़ाते हैं कि तुम नींद में उल-जलूल बक रहे थे परंतु उन्हें पता नहीं होता कि वह उल-जलूल नहीं बल्कि अपने जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण क्षणों की सत्य विवेचना कर रहा था। 'नारको टेस्ट' में मनुष्य के चेतन मन को निष्क्रिय और अवचेतन मन व जीभ को सक्रिय करके ही सच उगलवाया जाता है। यदि अहंकार व झूठ बोलने की वृत्ति का जीभ पर बन्धन न हो तो वह सत्य ही बोलती है। अहंकार व झूठ चेतन मन के द्वारा व्यक्त किये जाते हैं।

(क्रमशः)

ईर्ष्या का वहम मिटेगा रहम से

• डॉ. बलदेव राज, लुधियाना

पिंजरे में बंद एक चिड़िया के लिए एक बर्तन में पानी तथा दूसरे में कुछ अनाज के दाने रखे थे। पिंजरे के अंदर ही एक छोटी-सी मचान उसके बैठने के लिए बनी थी। इतने में बाहर की एक उड़ती चिड़िया पिंजरे के पास आकर बैठ गई। उसे देखकर पिंजरे में बंद चिड़िया सोचने लगी कि यह कितनी खुशकिस्मत है, चाहे जहाँ उड़े और ऊँचे आकाश का आनन्द लेती रहे, मेरी तो बस यह पिंजरा ही दुनिया है जहाँ मुझे घुटन महसूस होती है। ऐसा सोचकर वह दुख महसूस करने लगी तथा उस चिड़िया के प्रति ईर्ष्या का भाव उसके मन में पनपने लगा।

दूसरी ओर, बाहर की चिड़िया सोचती है कि यह पिंजरे में बंद चिड़िया कितनी सुखी है! न इसको दाने-पानी की चिन्ता है, न वर्षा और आँधी का डर और न ही किसी शिकारी पक्षी का भय। मुझे तो सदा दाने-पानी की चिन्ता लगी रहती है। बरसात व आँधी में कितना दुख होता है। कई बार तो बाज जैसे शिकारी पक्षियों से जान बचानी मुश्किल हो जाती है। ऐसा विचार करके वह स्वयं को दुखी समझने लगी तथा पिंजरे की चिड़िया से ईर्ष्या करने लगी।

प्रश्न उठता है कि क्या उनका एक-दूसरे से ईर्ष्या करना ठीक है? दोनों ही, दूसरे को अपने से बेहतर सुखी मान रही हैं। यदि दोनों के विचार इस प्रकार उलट जाएँ – पिंजरे की चिड़िया सोचे कि मैं कितनी सुखी हूँ, मुझे सब कुछ पिंजरे में प्राप्त है लेकिन इस बेचारी को तो दाने-पानी की चिन्ता, मौसम की तकलीफ व शिकारी पक्षियों का भय लगा रहता है। इन विचारों के कारण वह बाहर की चिड़िया को रहम की नज़र से देखेगी। बाहर की चिड़िया यदि यह सोचे कि मैं कितनी सुखी हूँ, जो स्वतंत्र हूँ, जहाँ चाहूँ जिधर चाहूँ, आकाश में स्वतंत्र उड़ सकती हूँ; इस पिंजरे की चिड़िया को यह सुख नहीं हो सकता, यह तो कैद में पड़ी है, बस यही उसकी दुनिया है। तो उसके मन में भी पिंजरे वाली के प्रति रहम की भावना उत्पन्न हो जायेगी। वह स्वयं को सुखी और दूसरी को दुखी महसूस करेगी। इस प्रकार विचार उलट जाने से दोनों की अवस्थायें बदल जायेंगी।

इसी प्रकार, प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सुखदायक पहलू भी होते हैं तथा दुखदायक पहलू भी। यदि हम सदा सकारात्मक पहलुओं को बुद्धि में रख सुख का अहसास करते रहें, अपने भाग्य की सराहना करते रहें तथा दूसरे के नकारात्मक पहलुओं को देख तरस की भावना रखें तो हमारे मन में कभी ईर्ष्या की भावना नहीं आयेगी तथा दुखी नहीं होंगे।

एक व्यक्ति धनवान है, वह धन द्वारा सेवा करता है और दूसरा व्यक्ति शारीरिक रीति से पुष्ट है, वह तन द्वारा सेवा करता है। तीसरा व्यक्ति समय, संकल्प द्वारा सेवा करता है। यदि तन द्वारा सेवा करने वाला यह सोचे कि मेरे पास धन नहीं है, मैं धन की सेवा नहीं कर सकता और इसलिए धन द्वारा सेवा करने वाले से ईर्ष्या करे और धन वाला तन द्वारा सेवा करने वाले से ईर्ष्या करे या कोई मनसा सेवा करने वाले से ईर्ष्या करे तो तीनों की सेवा का बल तथा सुख समाप्त हो जायेगा। अत: कल्याण इसमें है कि सभी अपनी-अपनी सेवा से स्वयं को सौभाग्यशाली समझें तथा दूसरे का शुभचिन्तन करें। **हर प्रकार की सेवा की आवश्यकता है। किसी में कोई कला है, किसी में कोई कला है। किसी में भाषण की कला, किसी में पेन्टिंग की कला, किसी में लिखने की कला है, सभी अपनी-अपनी योग्यता से अपना-अपना भाग्य बनाते जायें, यही सेवा की सिद्धि है। ईर्ष्या और कुछ नहीं, एक वहम है तथा उसका इलाज रहम है।**

❖

पुरुषोत्तम संगमयुग में दैवी परिवार की रचना

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

पिछले लेख में हम सबने यह देखा कि हर संस्था एवं सरकार का अपना संविधान (Constitution) होना ज़रूरी है क्योंकि संविधान के द्वारा ही संस्था के सदस्यों वा राज्य के नागरिकों को हक, ज़िम्मेवारी तथा कारोबार के लिए मार्गदर्शन दिया जाता है। इसकी जाँच-पड़ताल के लिए कानून की व्यवस्था की जाती है और न्यायालयों आदि का निर्माण होता है।

कई जगह पर न्यायालय का रूप न्यायमूर्ति आदि के द्वारा बना हुआ होता है और कई जगह पंचायत और पंचों पर कारोबार ठीक रीति से चलाने की ज़िम्मेवारी होती है। बहुत करके सभी संविधानों में चुनाव आदि का प्रबंध होता है और चुने हुए प्रतिनिधियों को कारोबार चलाने की सत्ता होती है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज के सुचारु व्यवहार के लिये नियम होते हैं और उन नियमों को आध्यात्मिक और धार्मिक स्वरूप देने के लिए संहिता रची जाती है। उसे भारत में 'स्मृति' के नाम से पहचाना जाता है। मिसाल के तौर पर, मनु के द्वारा बनाई गई समाज व्यवस्था की आचार संहिता को 'मनुस्मृति' कहते हैं और याज्ञवल्क ऋषि द्वारा रची गई आचार संहिता को 'याज्ञवल्क स्मृति' कहते हैं।

समाज में परिवारों का बहुत बड़ा स्थान है। परिवार की रचना आदिकाल से चली आती है। जैसे सत्ता के आधार पर बने हुए परिवार को राजाई परिवार कहते हैं। फिर आता है साहुकार परिवार जिसमें धन के आधार पर परिवार को मान्यता मिलती है। भक्ति के आधार पर बना हुआ परिवार भक्त परिवार कहलाता है। इन्हीं परिवारों की रचना के द्वारा भारत में वर्ण व्यवस्था का निर्माण हुआ और बाद में उनके बीच ही रोटी और बेटी व्यवहार का कारोबार चलता है। ये सब प्रकार के परिवार समाज के अंदर रचे हुए हैं परंतु संगमयुग में परमपिता परमात्मा एक नये प्रकार के परिवार की स्थापना करते हैं। संगमयुग में अनेक प्रकार की नवीनतायें होती हैं जैसे सारे कल्प में सभी के दो पिता होते हैं, एक लौकिक पिता और दूसरा पारलौकिक परमपिता परमात्मा। किंतु संगमयुग में अलौकिक पिता के रूप में परमात्मा, प्रजापिता ब्रह्मा की पहचान और उनके द्वारा यह दैवी परिवार रचने का कारोबार करते हैं। इसलिए इस परिवार को दैवी परिवार कहते हैं। इसी दैवी परिवार की रचना को व्यवस्थित स्वरूप विश्व विद्यालय द्वारा बने हुए दैवी संविधान (Divine Constitution) में दिया गया है। संविधान के पहले ही अनुच्छेद (Article) में लिखा हुआ है कि ईश्वर द्वारा प्रस्थापित दैवी परिवार की बनी हुई इस संस्था का नाम प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय है। बाद में, संविधान में स्थापक के रूप में परमपिता परमात्मा हैं तथा प्रजापिता ब्रह्मा और मातेश्वरी सरस्वती कौन है, उनके बारे में भी लिखा गया है। इसके बाद ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी कौन बन सकता है, उसका वर्णन इस दैवी संविधान में है। इसके बाद दैवी परिवार की व्याख्या भी की गई है। यह 'दैवी परिवार' शब्द भी संगमयुग की विशेषता है क्योंकि राजाई परिवार, साहुकार परिवार, प्रजा परिवार आदि तो सारे कल्प में होते हैं किंतु यह दैवी परिवार सिर्फ संगमयुग में ही होता है।

दैवी परिवार के बारे में बताया गया है कि यह एक आध्यात्मिक परिवार है जिसका आपस में संबंध बहन-भाई के रूप में, इस विद्यालय

के विद्यार्थियों के बीच रहेगा और प्रजापिता ब्रह्मा अलौकिक पिता एवं मातेश्वरी सरस्वती अलौकिक माता तथा निराकार शिव परमात्मा परमपिता परमेश्वर के रूप में इस परिवार के पिता हैं।

यह परिवार धर्मों के आधार पर या देश वा भाषा के आधार पर नहीं बना है। मिसाल के तौर पर धर्मों के आधार पर बने हुए परिवार को हिन्दू-मुस्लिम परिवार कहते हैं और राज्यों की सीमाओं के आधार पर बने हुए परिवार को भारतीय, अंग्रेज, अमेरिकन, रशियन परिवार आदि के रूप में गिना जाता है। भाषा के आधार पर बने हुए परिवार को गुजराती, पंजाबी कहा जाता है। इस प्रकार दुनिया में सभी जगहों पर परिवार उनके धर्म, देश, भाषा आदि के द्वारा गिने जाते हैं। किंतु अपने दैवी परिवार के अंतर्गत धर्म, देश, भाषा आदि के द्वारा कोई भी विभाजन नहीं है। हमारे बीच सिर्फ एक ही आध्यात्मिक संबंध है कि हम सबके पारलौकिक पिता शिव परमात्मा हैं और अलौकिक मात-पिता प्रजापिता ब्रह्मा और मातेश्वरी सरस्वती हैं और हम सब आपस में बहन-भाई के नाते से ब्रह्माकुमारी और ब्रह्माकुमार के रूप में व्यवहार करते हैं।

लौकिक दुनिया के कानून में भी 'दैवी परिवार' शब्द को स्वीकार किया हुआ है। दुनिया में दान के द्वारा कारोबार चलता है परंतु परिवार में दान शब्द नहीं होता। मिसाल के तौर पर, लौकिक पिता ने बच्चों की पढ़ाई के लिए जो खर्च किया, उसे दान नहीं बल्कि फर्ज अदाई के रूप में खर्च किया, ऐसा माना जायेगा। पति द्वारा भी पत्नी को घर खर्च के लिए जो धन दिया जाता है, वह भी दान नहीं माना जाता है बल्कि परिवार चलाने के लिए ज़रूरी खर्च में गिना जाता है। इसलिए दैवी परिवार के रूप में जो धन की लेन-देन परिवार को चलाने के लिए होती है, वह भी दान नहीं है और इसी कारण यह विश्व विद्यालय जनता से दान लेता है, ऐसा नहीं माना जाता है किंतु परिवार को चलाने के लिए आपस में धन आदि लेन-देन का व्यवहार होता है। इसी के आधार से यह विश्व विद्यालय 73 वर्षों से चल रहा है। यह कारोबार कैसे होता है, इसके लिए अगले लेख में चर्चा करेंगे। ❖

भग जाता है दुख

ब्र.कु. घमंडी लाल अग्रवाल, गुड़गाँव

अमृतवेले उठ बाबा को,
याद करे जो मन से।
दुम दुबका कर भग जाता है,
दुख उसके जीवन से।।
बाबा रोज़ सिखाया करते,
सुख से सबको जीना।
संयम, धैर्य, शान्ति, मैत्री का
करना प्राप्त नगीना।
जगह नहीं कोई भी अच्छी,
दुनिया में मधुबन से।
अमृतवेले उठ .....
जब भी जिससे मिलना हो तब,
प्यार अधर पर छलके।
वैमनस्य के छंट जायेंगे,
अपने आप धुंधलके।
सद्व्यवहार बना दे,
वैसी बात न बनती धन से।
अमृतवेले उठ .....
हम हैं उसके अनुपम बच्चे,
उसे प्राण से प्यारे।
चले आ रहे, चलना आगे,
उसका नाम पुकारे।
कहाँ खज़ाना होता कोई,
बढ़कर अपनेपन से।
अमृतवेले उठ .....

दुःख की पूर्ण निवृत्ति के लिए विकर्मों का हिसाब-किताब चुकाना आवश्यक है। उसे चुकाने के लिए परमात्मा की मार्ग-प्रदर्शना अथवा मत आवश्यक है। उनका मत लेने के लिए उनकी शरण लेना आवश्यक है अर्थात् उनके आगे समर्पण होना अथवा उनका बच्चा बनना आवश्यक है।

सच्ची श्रद्धा का फल

• सुरेश सोजतिया, अकोला

कहा जाता है, भगवान को सच्चाई और सफाई पसंद है। भगवान हैं भी सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्। जो स्वयं सच्चा है, वह सच से ही तो प्यार करेगा। सत्य का एक कतरा एक तरफ और दुनियावी धन-पदार्थों का भण्डार एक तरफ, फिर भी जीत सत्य की ही होती है। भगवान को चाहिए भी सच्ची भावना और दिल की सच्ची श्रद्धा। अंदर कुछ, बाहर कुछ, वह भगवान को स्वीकार नहीं होता। ज्ञान-मार्ग और भक्ति मार्ग – दोनों में सत्य का बड़ा महत्त्व है। भक्तिकाल की भारत की एक प्राचीन कथा है कि राजा चामुण्डाराय ने मातृऋण से उऋण होने के लिए, माता के आदेश से एक भव्य मंदिर का निर्माण कराया और उसमें भव्य प्रतिमा स्थापित की गई। जब मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा का अवसर आया तो देश के वरिष्ठ आचार्यों को निमंत्रित किया गया, प्रतिष्ठा के सारे विधि-विधान हो गये। मस्तिष्क पर डाला गया अभिषेक जब पाँवों की अंगुलियों तक आ जाता है, तभी अभिषेक पूर्ण माना जाता है परंतु हज़ारों स्वर्णकलशों में भरा पंचामृत भी प्रतिमा के पाँवों तक नहीं पहुँच पा रहा था, नाभी तक ही समाप्त हो जाता था। राजा चामुण्डाराय का सारा अभिमान चूर-चूर हो गया। सभी उपस्थितजनों को अवसर दिया गया पर मूर्ति द्वारा अभिषेक अस्वीकार हो रहा था। साँझ ढल रही थी, तभी एक बुढ़िया लकड़ी का सहारा लिए वहाँ पहुँची और बोली, मुझे भी अभिषेक करने दो, मैं बहुत ही दूर से आई हूँ। लोगों ने कहा, जिनका अभिषेक, महान पुण्यशाली, बड़े-बड़े सामंत और मंदिर निर्माता राजा भी हज़ारों कलश अर्पण कर न कर पाये, क्या तेरा यह दोने का थोड़ा-सा दूध कर पायेगा। तभी एक आचार्य ने कहा, इसे भी तो मौका दिया जाये।

बुढ़िया काँपते-काँपते प्रतिमा के पास जाकर खड़ी हो गई और बोली, प्रभु, अगर मैंने तुम्हें पाने के लिए ही तुम्हारी पूजा-अर्चना की हो तो अभिषेक स्वीकार कर लेना। अपने होंठों से स्पर्श कर उसने वह दूध का दोना मूर्ति को अर्पण कर दिया। हज़ारों सोने के कलश जो कार्य न कर सके, वह इस छोटे से दोने के दूध ने कर दिया। बाद में बुढ़िया का भी वहीं पास में मंदिर बना दिया गया।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का तो सारा आधार ही सच्चे दिल की श्रद्धा है। इसके साकार संस्थापक प्रजापिता के तन में अवतरित हो स्वयं (सत्यम् शिवम् सुन्दरम्) भगवान ने ही इस विद्यालय की स्थापना की है। जब बाबा साकार में थे, कितने ही गरीब बच्चे सच्ची भावना लिए उनके सामने आए। बाबा ने सच्ची भावना से दिए गए मुट्ठी भर चावल को भी बड़े प्यार से स्वीकार कर गरीब बच्चों को स्वर्ग के महलों का अधिकारी बनाया। आज भी कई लोग कहते हैं, इस विद्यालय में अमीरों को ही ज्ञान दिया जाता है क्या? नहीं। ज्ञान तो सभी को दिया जाता है पर सत्य यह है कि सच्चाई के बल से भगवान की दुआयें पाकर गरीब भी अमीर बन जाते हैं, बीमार निरोगी बन जाते हैं और दुखी, सुखी बन जाते हैं। ❖

ग्लोबल हॉस्पिटल में महत्त्वपूर्ण चिकित्सा सर्जरी कार्यक्रमों की जानकारी

घुटने व कूल्हे के जोड़ प्रत्यारोपण सर्जरी सुविधा
(Regular Knee and Hip Replacement Surgery)
दिनांक : 15 से 18 अक्टूबर, 2010
सर्जरी : डॉ. नारायण खण्डेलवाल, मुम्बई से कुशल व अनुभवी सर्जन
(Trained in U.K., Australia and Germany)
पूर्व जाँच के लिये केवल घुटने व कूल्हे के ऑपरेशन के इच्छुक रोगी संपर्क करें –
डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, फोन नं. 09413240131
फोन: (02974) 238347/48/49 **वेबसाइट**: www.ghrc-abu.com
फैक्स: 238570 **ई-मेल**: drmurlidharsharma@gmail.com

मरूभूमि में उद्यान

• रतनदास, जलपाईगुड़ी (कारागार), प.बंगाल

मैं सरकारी कार्यालय में उच्च पद पर नियुक्त था। जीवन-पथ पर चलते-चलते अचानक फिसलकर इस जलपाईगुड़ी जेल में एक कैदी के रूप में आ गिरा। यहाँ 1150 कैदी हैं। पाँच महीने पहले जेलर बाबू एवं सुपरिन्टेंडेंट साहब, सादे लिबास वाले दो भाइयों और एक बहन को ले आए और बोले, ये लोग प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सेन्टर से ईश्वरीय ज्ञान की शिक्षा देने आए हैं। ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक, ज्ञान-क्लास में आ सकते हैं। मैंने उनकी बातों को कोई महत्त्व नहीं दिया क्योंकि यहाँ प्रतिवर्ष रामकृष्ण मिशन से, क्रिश्चियन मिशनरी एवं इस्कोन सोसाइटी से लोग आते हैं, अपने-अपने धर्म की कथा सुनाकर जाते हैं। मुझे लगा कि ये लोग भी उसी प्रकार कोई नई धर्म-कथा सुनायेंगे।

कुछ दिनों बाद देखा कि सफेद कपड़ों वाले प्रकाश भाई और ब्रह्माकुमारी नीतू बहन बड़े-बड़े चित्रों के साथ प्रतिदिन ही यहाँ आते हैं एवं कुछ कैदी भाइयों को लेकर ज्ञान-चर्चा करते हैं। धर्म और अध्यात्म के संबंध में कुछ ज्ञान मुझे भी था। डेढ़-दो महीने बाद देखा कि उस ईश्वरीय ज्ञान क्लास में कुछ लोग प्रतिदिन ही जाते हैं और उनमें विशाल परिवर्तन भी देखा। उनके बोल-चाल, व्यवहार आदि सभी में पहले की भेंट में अद्‌भुत परिवर्तन दिखा। उनके इस परिवर्तन को देखकर अपने को रोक न सका और एक दिन ब्रह्माकुमार सुचन्दन भाई से अकेले में मिला। दो दिन बाद ही मुझे सात दिन का कोर्स करने का सुअवसर मिल गया। सात दिन के कोर्स के बाद प्रतिदिन मुरली सुनने व लिखने लगा। कुछ दिन बाद मैंने खुद में भी परिवर्तन पाया। **अब किसी को कड़वी बात या बेअर्थ बात कहने में खुद को असमर्थ महसूस करने लगा। अब मुझे कोई कड़वी बात कहता है तो उसे भी मैं आसानी से सह लेता हूँ। पहले ऐसा नहीं था। मैं महसूस करने लगा कि मेरी सहनशक्ति ने विकास पाया है। ब्रह्माकुमार भाई और बहन ने राजयोग की प्रक्रिया समझाई और करवाई भी। राजयोग के अभ्यास से मैंने आनन्द की अनुभूति की। ईश्वरीय ज्ञान पाने के बाद लगता नहीं कि मैं जेल में हूँ। सभी में अपनापन पाता हूँ और सबको अपना ही मान कर आचरण भी करता हूँ। इससे मुझे असीम आनन्द की अनुभूति हो रही है।**

मैं भारतवर्ष के प्राय: सभी बड़े-बड़े तीर्थस्थानों एवं मंदिरों का भ्रमण

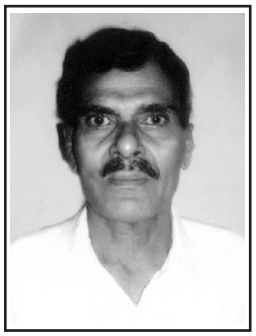

कर चुका हूँ। मेरे ज्ञान के अनुसार भारत के प्रत्येक ग्राम में कम से कम एक छोटा या बड़ा मन्दिर तो है ही और चार-पाँच गाँवों के बीच एक मस्जिद या गिरजा भी है जहाँ पूजा या प्रार्थना की जाती है। किन्तु, वर्तमान में मेरा विश्वास है कि यदि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शाखा भारत के प्रत्येक गाँव में होती और प्रत्येक व्यक्ति इस ज्ञान को सुनता, समझता और उसके अनुसार आचरण करता तो देश से अपराध या व्यभिचारी भावना का समूल नाश हो जाता। किसी भी प्रकार के अपराध की भावना किसी भी व्यक्ति के मन में जन्म ही न लेती। मैं परमपिता परमेश्वर से मंगल कामना करता हूँ कि भारत और विश्व के प्रत्येक गाँव एवं शहर में इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शाखा स्थापित हो। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय वर्तमान समाज-व्यवस्था में मरुभूमि में उद्यान के समान है। ❖

नरक से स्वर्ग की ओर

• सतीश सेन, विंध्याचल नगर, इंदौर

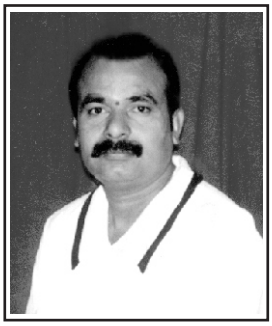

मेरा जन्म एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। दस भाई-बहनों में मैं तीसरे नंबर पर हूँ। परिवार में सदस्यों की संख्या अधिक होने के कारण किसी ने मुझ पर ध्यान नहीं दिया और मैं बचपन से ही संगदोष के कारण बिगड़ गया। मुसीबतें भी बहुत उठाईं, कई बार आधा पेट भोजन करके और पेपर पर सोकर भी दिन गुज़ारे। जब स्थिति अच्छी हो गई तो मेरे बिगड़े मित्र, जो बुरे दिनों में मेरा साथ छोड़ गये थे, वापस आकर मुझे घेरने लगे और मैं पूरी तरह उनके कुसंग में रंग गया।

बर्बादी 17 वर्षों की

जब मैं 21 वर्ष का हुआ तो मैंने एक कन्या से प्रेम-विवाह कर लिया। हमारी गृहस्थी की गाड़ी अच्छी चल रही थी किंतु कहा जाता है कि किस्मत के लिखे लेख को कोई नहीं मिटा सकता। मेरे जीवन में भी कुछ दुख और आने बाकी थे। मेरा पैर मेरी एक गाड़ी से जल गया और दर्द को ना सहन कर सकने के कारण मैं शराब पीने लगा। जैसे-तैसे पैर ठीक हुआ। फिर एक दीपावली पर मैं पहली मंज़िल से नीचे गिर गया। सिर में चोट लगने से टांके आये, एक पैर भी फ्रैक्चर हो गया जिस वजह से मुझे चार महीने का प्लास्टर चढ़ा। ढाई महीने तो जैसे-तैसे निकाल लिये, उसके बाद दर्द मिटाने के लिए एक बार फिर शराब पीने लगा। शराब की यह लत बढ़ती गई। मेरा हाल यह हो गया कि सवेरा शराब से होता और रात शराब पर खत्म होती। मेरे बच्चे व पत्नी बहुत दुखी व परेशान रहते। वे चाहते थे कि मैं शराब छोड़ दूँ और घर व बच्चों पर ध्यान दूँ लेकिन मैं तो बस शराब पीता था। जो भी मुझे उसे छोड़ने को कहता, वही मेरा दुश्मन बन जाता। इसी तरह शराब पीते मैंने 17 वर्ष बर्बाद कर डाले। मेरी पत्नी की आँख के आँसू सूखते न थे। बच्चों का बिलखना बंद होता न था।

कोई सोने से तोले तो भी नहीं पीऊँगा ...

जैसे सुख के बाद दुख आता है, उसी तरह से दुख के बाद सुख भी आता ही है। मेरे जीवन में भी खुशियों भरा सवेरा एक बहन शान्ति माता लाई जो कि ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़ी हुई थी। वह मुझे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थानीय शाखा में ले गई और संचालिका बहनों से मिलवाया। बहनों ने मुझे बाबा के बारे में पूर्ण जानकारी दी। मैंने सात दिन का कोर्स भी किया। लगभग छह मास तक सब कुछ ठीक चला लेकिन संगदोष के कारण मैं फिर शराब पीने लगा और उसी शराब के नशे में मैं एक दिन सेन्टर पहुँच गया। उससे पहले मैंने दीदियों से बाबा का बैज ले लिया था यह कहकर कि मैं शराब नहीं पीऊँगा। उन्होंने मुझे जब नशे में देखा तो वे बहुत नाराज़ हुईं और उन्होंने मेरा बैज यह कहकर वापस ले लिया कि अब जब तक तुम बाबा के सामने संकल्प नहीं लेते कि मैं जीवन-भर शराब को नहीं छुऊँगा, तब तक हम बैज नहीं देंगे। पहले हम 21 दिनों तक तुम्हें देखेंगे कि तुम हमारी बात मानते हो या नहीं, तभी बैज देंगे।

इन 21 दिनों की सज़ा ने मेरी ज़िन्दगी को पूरी तरह से बदल दिया। अब मुझे हर समय वही ज्ञान सूर्य, दया के सागर, शान्ति के सागर, करनकरावनहार शिव बाबा ही नज़र आते हैं। अब तो कोई मुझे सोने में भी तोल दे तो भी कभी शराब नहीं पीऊँगा और एक संकल्प और लिया है कि इस जन्म में मैं कभी भी बाबा को नहीं छोड़ूँगा।

'ओमशान्ति भाई'

बाबा के ज्ञान में आने से अब तो मेरी यह स्थिति है कि मैं कुछ बाबा से माँगने का विचार ही करता हूँ और बाबा तुरंत मुझे दे देते हैं। मेरे घर में भी सुख व शान्ति है। मेरी पत्नी और बच्चे भी ज्ञान मार्ग में चलकर मुझे सहयोग दे रहे हैं। मैंने अपनी दुकान का नाम भी 'शिव महिमा' रखा है क्योंकि यह सब शिव बाबा की कृपा से ही संभव हुआ है। अब मैं प्रतिदिन सेवाकेन्द्र पर जाकर मुरली सुनता हूँ। बाबा के द्वारा बताई श्रीमत का पालन करता हूँ और सभी को बाबा का परिचय बताता हूँ। अब तो हर एक व्यक्ति मुझे 'ओमशान्ति भाई' के नाम से ही पुकारता व जानता है।

हम एहसानमंद है सेन्टर की दीदियों के जिन्होंने हमारा नरक समान जीवन, स्वर्ग समान बना दिया। मेरा आप सभी भाई-बहनों से निवेदन है कि सच्चे दिल और उमंग से कहें, 'मेरा बाबा', 'वाह बाबा वाह, मीठा बाबा।' यही एक मंत्र सफलता की कुंजी है। बाबा ने कहा है कि बाबा के बच्चे कभी भूखे नहीं रहेंगे। बाबा ने अपने हर एक बच्चे के लिए दाल-रोटी की गारंटी तो इस जन्म के लिए ली ही है, आगे के 21 जन्मों का वर्सा भी दिया है। बस, बाबा की श्रीमत पर चलें व याद की यात्रा में रहें, इससे ही पाप कट जाते हैं। ❖

परिवर्तन

• ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश तिवारी, बलिया

ठिठुरती सर्दी की काली अंधियारी रात थी। छोटे-से कस्बे चांदपुर में सभी अपने-अपने घरों में रजाई ओढ़े दुबके हुए थे। सड़क के अंतिम छोर पर एक बड़ा-सा मकान था, इसी में रमेश अपनी माँ के साथ रहता था। एयरकंडीशन कमरा, पलंग पर मोटा गद्दा, मखमली चादर पर बड़ी मीठी नींद में सो रहा था। वहाँ बाहर की हड्डी कंपाने वाली ठंड का कोई असर नहीं था।

सुबह के तीन बजे अचानक शांत वातावरण में रोने के करुण क्रंदन से वातावरण कांप गया। रमेश हड़बड़ाकर उठ बैठा, जिज्ञासा लिए खिड़की खोली तो ठंडी हवा के झोंकों ने रमेश को कंपा दिया। उसने खिड़की बंद कर ली। बगल के मकान में किसी ने शरीर छोड़ दिया था। उसका मन भारी हो गया। कितना कष्टदायी है शरीर छोड़ना, खुद के लिए भी और दूसरों के लिए भी, भगवान कहते हैं, बच्चे, देह से ममत्व मिटा दो – यही संकल्प करते-करते रमेश बाबा से गुडमार्निंग कर बेड पर बैठ बाबा को याद करने लगा।

बैठे-बैठे संकल्प चलते रहे – बाबा ने कई बार कहा है, बच्चे, अब अचानक का खेल होगा इसलिए अपने आप को चेक करो कि अब तक तुम्हारे पुण्य के खाते में कितना जमा है, अगर अभी शरीर छूट जाए तो क्या साथ जायेगा। चिन्तन करते-करते रमेश ने सोचा कि थोड़ा लेटकर ही याद करें, बाबा तो कहते हैं, लेटकर भी याद कर सकते हो। वह लेट गया ऊपर लिहाफ डालकर। पुन: विचार आने लगे, बाबा कहते हैं, बच्चे, तन-मन-धन सब सफल करो तभी सफलता मिलेगी। वो तो मैं कर ही रहा हूँ। हाँ, थोड़ा-सा अलबेलापन है, ठीक हो जायेगा।

अचानक रमेश ने महसूस किया कि उसका शरीर छूट गया है। उसे विश्वास नहीं हुआ, उठना चाहा किन्तु उठ न सका। तो क्या सचमुच वह मर गया है? चारों तरफ देखा, बाहर अभी भी रोने की आवाज़ें आ रही थीं। उसका शरीर बेड पर निश्चल पड़ा था। तभी उसकी माँ ने कमरे में प्रवेश किया और उसके चीखने की आवाज़ पूरे मकान में फैल गई। वो 'बेटा-बेटा' कहते ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी, नौकर भी जाग गए थे। देखते-देखते लोगों की

भीड़ लग गई, सभी रो रहे थे। जवान बेटा चला गया है, अभी तो स्वस्थ था, कैसे हुआ, क्यों हुआ .. तरह-तरह के प्रश्न उठने लगे। डॉक्टर आया और मृत घोषित कर चला गया। आनन-फानन में उसके पापा, सगे-संबंधी सब आ गए। शरीर को नीचे ज़मीन पर लिटा दिया गया। उसने कहना चाहा, मत लिटाओ, बहुत ठण्डी है किन्तु उसकी आवाज़ कोई सुन ही नहीं रहा था। वो शरीर जो आज तक मखमली गद्दे पर सोता था, हज़ारों रुपयों के कीमती कपड़े पहनता था, उसकी ऐसी दुर्दशा! देखते ही देखते 'राम नाम सत्य' कहते-कहते शरीर को श्मशान में लकड़ियों पर लिटा दिया गया। उसके पापा, उससे कितना प्यार करते थे, आज उसके शरीर में आग लगाने जा रहे थे। वो चिल्लाया, पापा, आग मत लगाना, मैं जल जाऊँगा, पीड़ा होगी लेकिन वो सुन ही कहाँ रहे थे और उसकी चिता धूँ-धूँ कर जल उठी। वातावरण गमगीन था। वो वहीं मौजूद था फिर भी कोई उसे न देख रहा था, न सुन रहा था। वो बैचेनी में चारों ओर घूम रहा था। इतनी जल्दी सब कुछ खत्म हो जायेगा, उसने कभी सोचा ही नहीं था। अब उसे कीमती समय का एहसास हुआ, काश, वो समय रहते तीव्र पुरुषार्थ कर लेता, काश.. उसे पुन: मौका मिल जाता तो सब कुछ भूल पुरुषार्थ में लग जाता किन्तु अब क्या..जब शरीर ही नहीं रहा तो सब व्यर्थ..ये बंगला, गाड़ी, धन, संपत्ति, सगे-संबंधी.. किस काम के! रो-धोकर सब चुप हो गये। उसने आश्रम का भी चक्कर लगाया, सब यथावत्, मुरली चली, योग हुआ किन्तु वो नहीं था। उसका हृदय विदीर्ण हो रहा था क्योंकि पछतावे के सिवाय उसके पास कुछ भी नहीं था। सारे अहंकार पानी की तरह बह गए। अब था बिल्कुल निरहंकारी किन्तु क्या फायदा?

धीरे-धीरे वो ऊपर उठने लगा, देखा, बहुत-सी आत्मायें जा रही हैं सूक्ष्म लोक में, वो भी लग गया लाइन में। तभी उसे इशारा मिला, तुम दूसरी लाइन में जाओ, यह पास विद् ऑनर वालों की लाइन है। तो क्या वो इसमें नहीं है? उसने तो अपना तन, मन, धन सफल किया था। उसके मन में शंका उत्पन्न हुई। तभी सामने एक बड़ी स्क्रीन पर उसके कर्मों का चित्र उभरने लगा और स्थिति सामने आने लगी। **तुमने अपना तन सेवा में लगाया किन्तु देह-अभिमान के साथ; मन भी लगाने का प्रयास किया किन्तु लोभ, मोह के साथ; धन भी लगाया किन्तु अहंकार के साथ; श्रीमत मानी किन्तु मनमत के साथ। बाबा के पास तब पहुँचते जब निरहंकारी, निर्विकारी बन नम्रता से अर्पण करते।** उसने महसूस किया, यह सब सच है। पश्चाताप से छटपटा उठा, काश, एक मौका..सिर्फ एक मौका मिलता तो वो भी फर्स्ट जाने का पुरुषार्थ करता।

तभी उसने देखा, उसकी माँ कह रही थी, उठो बेटा, उठो बेटा। उसने कहा, माँ तुम भी चली आई। माँ ने उसे ज़ोर से हिलाया, तुझे क्या हो गया है? क्या बड़बड़ा रहा है? उसकी आँखें खुल गईं और चौंक कर चारों तरफ देखा, अपने शरीर को छुआ..वो तो ज़िन्दा है। माँ ने कहा, बेटा, कोई बुरा सपना देखा है क्या? तुम्हारी आँखों से आँसू गिर रहे हैं..तकिया भी भीगा हुआ है..। वो धीरे से बोला, माँ, ये आँसू नहीं, मेरा अहंकार, मेरा देह-अभिमान, मेरा क्रोध..सब आँसू बनकर बह गये..मेरा परिवर्तन हो गया। ओ बाबा, आपका लाख-लाख शुक्रिया, समय रहते जगा दिया..मेरी आँखें खोल दीं..अब मैं आपका सच्चा बच्चा बनकर दिखाऊँगा.., कहते-कहते वह फफक-फफक कर रो पड़ा। ये आँसू पश्चाताप के नहीं, प्रेम के थे।

अब रमेश बिल्कुल बदल गया है। जो भी देखता है, चकित रह जाता है। बिल्कुल शान्त, नम्र, अंतर्मुखी हो तीव्र पुरुषार्थ में लग गया है। ❖

विकारजीत ही महावीर है

• ब्रह्माकुमार डॉ.संजय माली, पाचोरा

सभी जानते हैं कि आत्मा को परमात्मा से अथवा प्रकृति से जोड़ने वाला सेतु मन ही है। प्रकृति से जुड़ा मन देहाभिमान के वशीभूत होकर दुखी बन जाता है और परमचेतन परमात्मा से जुड़ा मन सुखस्वरूप हो जाता है। भौतिक संसार के विचार अथवा जड़ प्रकृति विषयक विचार हमें जड़ जैसा बनाते हैं और चेतन परमात्मा संबंधी विचार हमें उमंग-उत्साह से भर देते हैं।

उदारता और मधुरता से होती है स्व-उन्नति

ज्ञानीजन मानते हैं कि परमार्थ के लिए दृष्टि को परिष्कृत करने तथा वृत्ति को बदलने की आवश्यकता है। दृष्टि में रूहानियत तथा वृत्ति में उदारता एवं मधुरता भरने से ही आध्यात्मिक उन्नति संभव है। ट्रस्टीपन अथवा निर्लेप मन:स्थिति से कर्म संपादन करने की कला आत्मसात् की जाये तो किसी का भी बेड़ा पार हो सकता है। साक्षीभाव से कर्म करने से हम आनंद सागर शिव परमेश्वर से सीधा संपर्क प्रस्थापित कर सकते हैं, यह अकाट्य सत्य है। ज्ञान का तीसरा नेत्र (आत्मिक दृष्टि) मिलने से, मुक्ति तथा जीवनमुक्ति की मंज़िल पर पहुँचना आसान हो जाता है।

निरंतर योगाभ्यास के द्वारा मन रूपी बंदर की चंचलता समाप्त हो जाती है। कहते भी हैं, स्थिर मन है सुख का सागर और चंचल मन है दुख का सागर। एक दोहा भी प्रसिद्ध है –

'रण सहस्त्र लड़े, जीते राज्य हज़ार।
जो जीते स्वयं को, वो ही शूर सरदार।।'

औरों के हित में ही अपना हित

मन की तार परमात्मा से जुड़ती है तब आत्मा को परमशक्ति रूपी करंट मिलना आरंभ होता है। परमात्मा के द्वारा शक्ति पाने से आत्मा लाइट-माइट स्वरूप का अनुभव करती है। इस संसार में रहते हुए भी न रहना, देखते हुए भी न देखना तथा कर्म करते हुए भी अकर्मा बने रहना अथवा कमलपुष्प समान निर्लेप होकर जीवनयापन करने से ही भवसागर लाँघ सकते हैं। आत्मा को अव्यक्त परमात्मा का एक बार भी अनुभव हो गया तो इस संसार में और कुछ पाना शेष नहीं रहता। फिर तो बस उस निर्विकार, सर्वाधार, परमचेतन से मिलन मनाओ और खो जाओ अपनी ही आंतरिक शान्ति में। निराभिमानी होकर सबकी भलाई का काम करना तथा प्रत्यक्ष उदाहरण बनकर दूसरों को भी ज्ञानदान, गुणदान करना ही शेष रह जाता है। वास्तव में तो यही है सच्चा जीवन जिसमें समाई हैं अपरंपार खुशियाँ। **औरों के हित में ही अपना हित छिपा होता है,** यह बात जिस दिन हर व्यक्ति की समझ में आयेगी उसी दिन यहाँ पूर्ण रूप से सतयुग का प्राकट्य होगा।

मन, वचन, कर्म की शुद्धता से ईश्वरीय आकर्षण

रुपयों का लालच तो कर देता है इन्सान का जीना हराम फिर वह कैसे पायेगा आत्मिक आराम? केवल धन संग्रह की ही खातिर दौड़-धूप करने वाला मनुष्य जीवन के असली उद्देश्य से भटक जाता है और आंतरिक शांति गँवा बैठता है।

ज्ञान मनन से मनुष्य के जीवन में पवित्रता का उदय होता है, विवेक प्रगट होता है। मन, वचन, कर्म की शुद्धता के कारण परमात्मा में आत्मा का सहज आकर्षण वैसे ही पनपता है जैसे कोई प्रियतमा का अपने दिलबर के प्रति प्रेम। विवेक वैराग्य से जब आत्मा अंतर्मुखी हो जाती है तब ज्ञान-सूर्य उदित होता है और अज्ञान-अंधेरा दूर होता है। अखण्ड योगाभ्यास इंद्रियों में शीतलता लाता है जिससे आत्मा अलौकिक सुख-शान्ति का अनुभव करने लगती है। आत्मा राजा का मन

रूपी प्रधानमंत्री पर नियंत्रण हो जाने से प्रजा रूपी इंद्रियाँ भी पूर्ण कंट्रोल में आ जाती हैं। निर्विकार परमात्मा की याद से मन निर्विकार बनता है। ऐसे मन से विकार वैसे ही भाग जाते हैं जैसे सिंह को देखकर सियारों का झुण्ड दफ़ा हो जाता है।

कमाल करता है प्रेम-सिन्धु का प्रेम

मैं जड़ शरीर नहीं, मैं तो सत्-चित्-आनंद स्वरूप हूँ, यह यथार्थ अनुभव ही आत्मा को लाइट-माइट स्वरूप प्रदान करता है। ईश्वरीय ज्ञान, हृदय रूपी मंदिर को आनंद प्रकाश से भर देता है। इससे जीवन में अनेक सद्गुण वैसे ही प्रगट होते हैं जैसे वसंत ऋतु में रंगबिरंगे फूल खिलते हैं। दुर्गुण वैसे ही विदा होने लगते हैं जैसे स्वच्छ घर से मच्छरादि कीटक भाग जाते हैं। प्रेमसिन्धु का दिव्य स्नेह आत्मा में वैसी ही प्रफुल्लता लाता है जैसे किसी पेड़ की जड़ में जलसिंचन से पेड़ हरा-भरा तथा शोभायमान दिखाई देता है। परमात्म प्रेम प्राप्ति के कारण भीतर की खुशी चेहरे पर ऐसी झलकती है मानो किसी ने अभी-अभी अमृतपान किया हो। अलौकिक आनंद पाने से मन-मयूर नाचने लगता है। सांसारिक दुखों का नामोनिशान हमेशा के लिए खत्म हो जाता है। शोक संतप्त मन वैसे ही शांत होता है जैसे वर्षाकालीन मेघों ने किसी दावानल पर शीतल जल सींचा हो।

जगता है सच्ची मित्रता का भाव

अवर्णनीय शांति के अनुभव से आत्मा का रोम-रोम पुलकित हो उठता है। ज्ञानामृत के रसपान से आत्मा निजानन्द स्वरूप को पहचान लेती है, फिर तो मृत्यु का भी डर खत्म हो जाता है। आत्मा में अभूतपूर्व शक्ति का संचार होता है और मनुष्य सच्चे मायने में निर्भय हो जाता है सदा के लिए। ईश्वर के प्रति मन में असीम कृतज्ञता प्रगट होती है। समस्त प्राणिमात्र के प्रति सच्ची मित्रता का भाव जगता है। मन में दया और करुणा उत्पन्न होती हैं। हृदय प्रेमपूरित हो जाने से वह प्रेम आँसुओं का रूप लेकर नयनों से टपकने लगता है। संसार-पंक में फँसे अन्य मनुष्यों के प्रति बेहद सहानुभूति उत्पन्न होती है। मन नफरत को वैसे ही त्याग देता है जैसे सर्प पुरानी केंचुल को। फिर दुखियारों की सेवा के लिए तन भी अधीर हो जाता है। मन भ्रमर परमात्म कमल में अनुरक्त होने से सर्व प्रकार की इच्छायें मिट जाती हैं। जैसे कोई पक्षी सूखे हुए वृक्ष को छोड़ जाता है वैसे चिंता भी मन को त्याग देती है। प्रभु संग से जब मन रूपी वस्त्र को निर्विकार भाव रूपी रंग लग जाता है तब अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होता है। काम-क्रोधादि विकारों ने ही आत्मा को दुखी बनाया था, यह बात अनुभव के तौर पर समझ में आने से मुक्ति का द्वार खुलता है।

शब्द भी हो जाते हैं मौन

आत्मा एक लाइट है जिसके दो अर्थ हैं, प्रकाश और हलकापन। शरीर तो आत्मा का वाहक मात्र है। अहम् छोड़ने से भ्रमजनित वहम नष्ट होता है और सबके प्रति रहम जगता है। आत्मा अत्यंत सूक्ष्म होती है और उसकी गति तीव्रतम होती है। सहज ही वह दूर-दूर की सैर कर सकती है शायद इसलिए उसे 'उड़नखटोला' कहा जाता होगा। योग द्वारा प्रशिक्षित आत्मा सेकंड में ब्रह्मलोक की उड़ान भर सकती है तथा सेकंड में ही साकार मनुष्य लोक स्थित इस शरीर में वापस भी आ सकती है। अखण्ड योगसाधना से मन पर नियंत्रण हो जाता है। मन के सभी संकल्प शांत हो जाते हैं और वह केवल परमात्मा के ही एक विचार में टिक जाता है। फिर सर्व प्रकार का सांसारिक बोझ तथा 'तू तू मैं मैं' खत्म हो जाने से आत्मा एकदम हलकी हो जाती है। जब संकल्प शांत होते हैं तब मस्तिष्क में परम सुखदायी, प्रशांत संवेदना उत्पन्न होती है और लगता है, संसार में इससे बेहतरीन और कोई चीज़ नहीं है। एकदम हलकापन, मन की प्रसन्नता, उत्साह में अत्यधिक वृद्धि तथा पारलौकिक शक्ति की अनुभूति होने लगती है। शब्द

भी मौन हो जाते हैं। मन उसी दिव्य अनुभव में टिके रहना चाहता है। सच पूछो तो आत्मा के परमात्मा से बार-बार मिलन का अभ्यास मन को परम विश्राम देता है जो अन्यत्र कहीं भी नहीं है।

योगी बन जाता है पावन तीर्थ

ज्ञान-मनन एवं परमात्म चिंतन से आत्मा को अशरीरीपन का सुखद एहसास होता है। विदेही पिता के बच्चे हम भी विदेही हैं, यह बात अनुभव के स्तर पर समझ में आती है तो जीवात्मा का सही मायने में कल्याण होता है। विदेही स्थिति विलक्षण परमानंदमयी होती है कि बस बिना किसी हस्तक्षेप के उसी अलौकिक स्वरूप में खोये रहने को जी चाहता है। देहादि की सुध-बुध बिसरने की इस स्थिति का बखान असंभव है। इस स्थिति में समस्त विश्व को प्रेम, शांति, आनन्द, पवित्रता का सकाश देना ही आत्मा का फ़रिश्ता स्वरूप है। ऐसा योगी पावन से भी पावन तीर्थ बन जाता है। सारा कामकाज दिन-रात परमात्मा की स्मृति में ही होता रहे तो आत्मा शीघ्र कर्मातीत बनती है। कर्तृत्व अभिमान रहित होकर की जाने वाली निष्काम सेवा से आत्मा का अगला पिछला सब हिसाब खत्म हो जाता है। पवित्रता के बल से प्रकृति पर विजय पाकर आत्मा को महावीर बनना ही है। कहा गया है,

'निशाने पर लगे उसे तीर कहते हैं,
साहस से जीये उसे वीर कहते हैं
और जीत ले विकारों को अपने,
उसे महावीर कहते हैं।'

ज्ञान-दान है महानतम पुण्य कर्म

परमशिक्षक परमात्मा अपने वत्सों को ज्ञानामृत से परितृप्त करते रहते हैं। मुरली द्वारा योगेश्वर से प्राप्त ज्ञान को आत्मसात् करके औरों में बाँटना इहलोक का महानतम पुण्यकर्म है। आत्मा को सद्गुणों से शृंगारते हुए निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी स्वरूप की दिव्य स्टेज पर ले जाना ही परम पुरुषार्थ है। सत्यम् शिवम् सुंदरम् परमात्मा द्वारा सत्य युग स्थापना के श्रेष्ठतम कार्य में मनसा, वाचा, कर्मणा सक्रिय योगदान उज्ज्वल भविष्य का परिचायक है। सेवा में जो भी पार्ट हो, हृदयपूर्वक निभाते रहना ही हमारी सद्गति सुनिश्चित करता है। श्रेष्ठ उदात्त कर्मों के निर्माण के साथ-साथ आदर्श जीवनयापन का परम लक्ष्य हमें पवित्रता के शिखर की ओर ले जाता है।

किसी से वैर नहीं, कोई गैर नहीं

परमपद पाने का आधार है ईश्वरीय स्मृति। ईश्वरीय स्नेह पाने का साधन है पवित्र आचार, विचार तथा उच्चार। तीव्र पुरुषार्थी ही प्रभु के अक्षय प्रेम का अधिकारी होता है। परमात्मा से प्राप्त प्रेम, शान्ति, आनंद का सकाश सारे विश्व में रेडियो तरंगों समान प्रसारित करने वाली आत्मा वरदानी एवं विश्व कल्याणी हो जाती है। सर्व के लिए शुभभावना के दानी तथा गुणमूर्त बनकर सद्गुणों का दान यही दातापन की अवस्था है। सहिष्णुता, समता को धारण कर पवित्रता की जीती जागती तस्वीर बनकर सर्व का दुखनिवारक बनना ही महानता की निशानी है। जीवन में आने वाली हर कठिनाई का जो धैर्यपूर्वक सामना करता है तथा कभी भी हिम्मत नहीं हारता वही विजयी बनता है। किसी के भी बहकावे में न आकर जो सच्चाई और अच्छाई का तनिक भी त्याग नहीं करता, आदर्शों के लिए हर प्रकार के कष्ट का सामना करता है वही है परम भाग्यशाली। प्रभु के कार्य में अपना तन, मन, धन अर्पण करने वाले का जीवन निर्मल दर्पण बन जाता है। योगी को किसी से भी बैर नहीं और उसके लिए कोई गैर नहीं। दूसरों की भलाई में ही खुश होता रहता है, वही खुदा का सच्चा बंदा 'खुदाई खिदमतगार' होता है। न किसी से डरता है, न किसी को डराता है। न किसी बात से आहत होता है, न किसी को क्षुब्ध करता है। ❖

मैंने एशिया में ईश्वर का अद्भुत नज़ारा देखा

• ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश, आबू पर्वत

हाल ही में मेरा आठ एशियाई देशों में सेवार्थ जाने का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। मैं इससे पहले भी विदेश यात्रा पर बाबा की सेवा पर जाता रहा हूँ लेकिन इस बार की यात्रा एकदम भिन्न और रोमांचित करने वाली रही। फिलीपिन्स, दक्षिण कोरिया, इण्डोनेशिया, चीन, हांगकांग, वियतनाम, कम्बोडिया और थाईलैण्ड – इन देशों की ईश्वरीय सेवा के दौरान बाबा ने बहुत अनोखे अनुभव कराये।

सभी देशों में ज्ञान-योग के क्लासेज़ हुए, विश्वविद्यालयों में प्रवचन हुए, व्यापार मण्डलों में सेमिनार रखे गये, बड़ी कम्पनियों में तनाव के विषय पर कार्यशालाएँ हुईं और पब्लिक कार्यक्रम भी आयोजित हुए। आश्चर्यजनक किन्तु सत्य, सभी आयोजनों में लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। समय से पूर्व पहुँच जाना, अंत तक एकटक होकर सुनते रहना और प्रश्नोत्तर, कॉमेंट्री से योग अभ्यास आदि सब कुछ हुआ।

मैं इस सेवा-यात्रा के लिए बापदादा, दादियों के साथ दीदी डॉ. निर्मला जी का हृदय से आभार करूँगा कि उन्होंने इतनी सुन्दर विधि से सारा कार्यक्रम बनाया, जो बाबा की सेवा भी हुई, सभी भाई-बहनों से मिलना भी हुआ और बाबा के सेवाकेन्द्र देखने का सुअवसर भी मिला। मैं उन सभी भाई-बहनों का भी शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने दिन-रात एक करके, बाबा की सेवा को आगे बढ़ाने में तन-मन-धन से हर तरह का सहयोग दिया।

प्रत्येक कार्यक्रम में प्रश्नोत्तर भी रखे जाते थे। ज्ञानामृत के सुधी पाठकों के लाभार्थ, मैं कुछेक प्रमुख प्रश्न और उनके उत्तर यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ –

प्रश्नः- फिलीपिंस में एक युवा ने प्रश्न पूछा कि क्या राजयोग के द्वारा मुझे भी अपना कैरियर (भविष्य) बनाने में कोई मदद मिल सकेगी?

उत्तरः- कहने में आता है कि योग से हर प्रकार की योग्यता व्यक्ति के जीवन में आ जाती है। भारत का प्राचीन राजयोग एक ऐसी विद्या है, जिसके नित्य प्रति अभ्यास से बुद्धि विशाल हो जाती है और मन नियंत्रण में आ जाता है। मेरा विगत चालीस से भी अधिक वर्षों का यह अनुभव है कि राजयोग के माध्यम से एकाग्रता की शक्ति, निर्णय शक्ति, मनोबल, आत्म-बल, आत्म-सम्मान आदि सभी कुछ बढ़ जाता है। कहना न होगा कि जब उपरोक्त सभी शक्तियाँ हमारे पास होंगी तो कैरियर अवश्य ही बहुत अच्छा बन जायेगा। मैंने स्वयं राजयोग का अभ्यास करते हुए एम.एस.सी. की पढ़ाई में स्वर्ण पदक प्राप्त किया और इसका सारा श्रेय राजयोग को ही जाता है। मैंने यह भी अनुभव किया है कि योग को जान लेने के बाद मन पर नियंत्रण बढ़ जाता है और बुद्धि भी सही समय पर, सही निर्णय लेने लगती है। वास्तव में, ये दोनों ही शक्तियाँ किसी भी व्यक्ति के भविष्य को संवारने में निर्णायक सिद्ध होती हैं। मेरा आपसे विनम्र अनुरोध है कि कृपया आप भी राजयोग का साप्ताहिक पाठ्यक्रम अवश्य करें, इससे आपके जीवन में गुणयुक्त परिवर्तन आ जायेगा। मैं आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

प्रश्नः- थाईलैण्ड में एक बैंकर ने प्रश्न किया कि क्या वर्तमान समय की उतार-चढ़ाव वाली अर्थव्यवस्था को योग अथवा आध्यात्मिकता के माध्यम से स्थिर किया जा सकता है?

उत्तरः- हमारे विश्व विद्यालय में एक बहुत ही सुन्दर बात बताई जाती है। वह है – अवस्था से व्यवस्था। भाव यही है कि जब हमारे मन में स्थिरता

होती है तो उसका प्रभाव बाहर भी देखने में आता है। मन के डाँवाँडोल हो जाने पर बाहर की व्यवस्था भी अव्यवस्थित हो जाती है। बाहर की परिस्थितियाँ तो आने वाले दिनों में और भी विपरीत होने वाली हैं। ऐसे समय में केवल अन्दर की दृढ़ता और एकाग्रता के माध्यम से ही उन पर विजयी बना जा सकता है। वैसे भी कहते हैं कि धन-सम्पत्ति कभी भी किसी एक व्यक्ति के पास नहीं रहते अपितु चलायमान रहते हैं। हमारे मन में सभी के प्रति शुभ भावना हो, ईश्वर पिता के प्रति गहन आस्था हो और अपने पर विश्वास हो तो कठिन-से-कठिन तूफान भी तोहफा बन जाता है। आज आवश्यकता राजयोग को जीवन में अपनाने और उस मार्ग पर चलने की है। आप अपने घर के निकट स्थित ब्रह्माकुमारीज़, राजयोग केन्द्र पर जायें, अवश्य ही आपको राहत मिलेगी।

प्रश्नः- इण्डोनेशिया में एक गृहणी ने पूछा कि मेरे परिवार में शान्ति नहीं है, बात-बात पर मनमुटाव हो जाता है, जिससे घर का वातावरण सदैव भारी रहता है। कृपया कोई उपाय सुझायें?

उत्तरः- हमारी अपेक्षाएँ दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही हैं और दूसरों के प्रति नकारात्मक दृष्टि होती जा रही है। परिणामस्वरूप छोटी-छोटी बातों

थाईलैण्ड (बैंकाक)- 'राजयोग - निश्चिन्त जीवन का आधार' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के बाद ब्र.कु. आत्मप्रकाश भाई, ब्र.कु. इला बहन एवं अन्य समूह चित्र में।

का बतंगड़ बन जाता है, जिससे अनेकों सुन्दर और सुशिक्षित परिवार भी टूट रहे हैं। आज हमारी सहनशक्ति बिल्कुल जैसे कि जवाब ही दे गई है। सबसे पहले हमें यह समझना होगा कि हरेक मनुष्यात्मा अपना रोल बहुत ही अच्छे तरीके से निभा रही है, मैं स्वयं को बदलने के सिवाय और कुछ भी नहीं कर सकता हूँ। जब हम बदल जाते हैं तो हमारे लिए जैसे कि सारा संसार ही बदल जाता है। घर को एकता के सूत्र में बाँधे रखने के लिए गुणग्राही बनें, बड़ों को सम्मान दें, छोटों को स्नेह दें और सर्व को साथ लेकर चलें। प्रातः उठकर कुछ क्षणों के लिए योग अभ्यास (मेडिटेशन) करने से घर का वातावरण परिवर्तित हो जायेगा।

प्रश्नः- चीन में एक व्यवसायी ने प्रश्न किया कि क्या ईश्वर पिता में आस्था रखना ज़रूरी है?

उत्तरः- जैसे घर में पिता परिवार का मुख्य होता है, ठीक वैसे ही बेहद के परिवार (संसार) का परमात्मा मुखिया है, वह जगत-नियंता और भाग्यविधाता भी है। परमात्मा पिता को प्रेम से याद करने और उसके प्रति श्रद्धा रखने से हमारा चहुँमुखी विकास होता है। आज कर्मकाण्ड और बाह्य आडम्बरों के कारण बहुत सारे लोग परमात्मा से दूर हो रहे हैं। मैं अपने अनुभव के आधार पर बताना चाहूँगा कि प्रभु पिता में विश्वास, जीवन में बहुत सफलता दिलाता है, मन को खुशियों से भर देता है और घर-परिवार में सुख-शान्ति बनी रहती है। ईश्वर पिता में आस्था रखने का अभिप्राय कोई घरबार छोड़ कर जंगल जाने से नहीं है अपितु व्यवसाय में रहते, परिवार में रहते हमें कर्मयोगी बनना है।

प्रश्नः- हाँगकाँग में एक बहन ने पूछा कि क्या राजयोग को ज्वाइन करने के लिए मुझे अपना धर्म छोड़ना पड़ेगा?

उत्तरः- धर्म बदल लेने से किसी का जीवन नहीं बदल जाता। आज आवश्यकता व्यक्तियों के जीवन में बदलाव लाने की है। राजयोग वास्तव में जीवन जीने की कला है, जिसे हर धर्म और हर भाषा-भाषी अपना सकता है। अनुभव तो यह कहता है कि राजयोग को अपनाने के बाद ईसाई अच्छा ईसाई बन जाता है और हिन्दू बेहतर हिन्दू बन जाता है। हमारे यहाँ दैहिक धर्म को बदलने की कोई बात नहीं है अपितु अन्दर आत्मा को बदलना है। जब अन्दर से बदलाव आता है, आत्म-ज्ञान मिल जाता है तो सभी अपने लगने लगते हैं। हिन्दू-मुसलमान का भेद समाप्त हो जाता है, इसी को सच्चा विश्व-बंधुत्व कहेंगे। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का उद्देश्य हर प्रकार के भेदभाव से मुक्त सुन्दर संसार की रचना करना है। अतः आप बिना किसी भय और हिचकिचाहट के ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग केन्द्र पर पधारें, आप जो हैं, वही रहेंगी, हाँ, बेहद दृष्टिकोण वाली इंसान ज़रूर बन जायेंगी। ❖

विशेष सूचना

आबू रोड शान्तिवन से कुछ ही दूरी पर 'Radha Mohan Mehrotra Global Hospital Trauma Centre' तथा 'Global Hospital Institute of Ophthalmology' के बिल्कुल नजदीक एक वृद्धाश्रम 'शिवमणि होम' नाम से स्थापित किया गया है।

शिवमणि होम में प्रदान की जाने वाली सुविधायें निम्नलिखित हैं –

1. इसकी कुल क्षमता 100 व्यक्तियों के लिए है। लिफ्ट की सुविधा भी है। वरिष्ठ नागरिकों की हर सुविधा को ध्यान में रखकर इसका निर्माण किया गया है।
2. विशेष मेडिटेशन अनुभूति कक्ष, योग-व्यायाम कक्ष भी निर्मित किये गये हैं। साथ ही टीवी., वीडियो और म्यूज़िक सेन्टर्स की सुविधायें भी उपलब्ध हैं।
3. रसोईघर और कपड़े धुलाई की आधुनिक सुविधायें उपलब्ध हैं।
4. मिलने वाले/अतिथियों के निवास के लिए अलग से कक्ष एवं भोजन आदि उपयुक्त खर्चे/रेट पर उपलब्ध है।
5. सामान्य रोग जैसे खांसी, जुकाम, फ्लू आदि के लिए 24 घंटे डिस्पेन्सरी स्टाफ एवं नर्स स्टाफ की व्यवस्था की गई है। विशेषज्ञ डॉक्टर्स को नज़दीकी 'Radha Mohan Mehrotra Global Hospital Trauma Centre' तथा 'Global Hospital Institute of Ophthalmology' से बुलाया जा सकता है।
6. आप भी इस घर के सदस्य बन सकते हैं यदि
   - आपकी उम्र 60 साल से अधिक है।
   - आप इस घर के सभी नियमों का पालन करें।
   - आप आध्यात्मिकता में विशेष रुचि रखते हैं। किसी भी प्रकार की योग साधना करते हैं या प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा सिखाये जाने वाले राजयोग का अभ्यास करते हैं।

'शिवमणि होम' से संबंधित अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु हमें लिखें –

shivmani.opk@gmail.com अथवा

फोन नं. 09414037045 पर संपर्क करें।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 worldrenewal@bkivv.org